लघु कहानियो के माध्यम से जीवन के प्रत्येक युगीन यथार्थ से सबद्ध प्रसगों की अभिव्यक्ति हो रही है। आज समाज जिस त्रासदी को भोग रहा है, जिन आशाओ-निराशाओ, विपमताओं और कुठाओ के बीच जीवन जी रहा है, वही तिलमिलाहट लघु कथाओ मे व्यक्त हो रही है।

स्तरीय लघु कहानी के लिए कल्पना नहीं अनुभूति चाहिए, क्योकि आज की युगीन समस्याऍ स्थितियॉ एवं चित्तवृत्तियॉ इतनी अधिक जटिल हो गयी हैं कि कोरी कल्पनाऍ पाठक को आकर्षित नहीं कर पातीं अपितु जिनमे नये-नये परिवेश की सच्चाईयो का विश्लेषण किया गया हो, ऐसी ही कहानियाँ सफल मानी जाती हैं। इन लघु कहानियों को इसी मानदण्ड पर उतारने का लघु प्रयास किया है।

"चयन" लघु कहानी संग्रह में समाज की उन तमाम विसगतियों, उतार-चढ़ाव एव आर्थिक विषमताओं का चित्रण किया गया है जिनसे कहीं न कहीं प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हो रहा है।

चयन

(लघुकथा सग्रह)

डॉ. मजु लता तिवारी

सस्कृति निलयम्
रामजस बिल्डिग,
4—ए, पार्क रोड लखनऊ — 226 001

प्रकाशक :
सस्कृति निलयम्
रामजस बिल्डिग,
4–ए, पार्क रोड
लखनऊ – 226 001

संस्करण :
प्रथम 2001

मूल्य :
30 00 रुपये

मुद्रक :
रोहिताश्व प्रिण्टर्स
ऐशबाग रोड, लखनऊ

समर्पण

सारस्वत साधना
के प्रेरणास्रोत

परम आदरणीय

बाबू जी

श्री नारायण तिवारी

अम्मा जी

श्रीमती रुक्मिणी तिवारी

एव सभी इष्टजनो,
की
स्नेहसृष्टि को
सादर

शुभाशंसा

मुझे डॉ. मंजु लता तिवारी रचित लघु कथाओ को पढने का अवसर मिला। प्रत्येक कहानी अत्यन्त चुभती-सी एव मर्मस्पर्शी है जो देर तक कुछ सोचने को विवश करती हे और दूर तक कहीं ले जाती है।

एक युग था जब तिलस्म और अय्यारी से कथाओं का ताना-बाना बुना जाता था। देवकीनन्दन खत्री, राम गोपाल गहमरी तथा किशोरी लाल गोस्वामी की रचनाओ को ले जिनमें अन्तर्निहित तिलस्म, रहस्य ओर रोमांच हमें विमुग्ध कर देता था। फिर एक युग आदर्शवादी उपन्यासों और कहानियों का आया। जब प्रेमचन्द ने कथा साहित्य-लेखन प्रारम्भ किया तो क्रूर-कठिन जीवनगत स्थितियाँ सामने आयीं। प्रेमचन्द किसी कल्पनालोक में विचरण के पक्षधर नहीं थे। तभी उन्होंने एक अवसर पर कहा भी --

"साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफ़िल सजाना और मनोरजन का सामान जुटाना नहीं हे- उसका दरजा इतना न गिराइए। वह देश-भक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।.. हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमे उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाईयों का प्रकाश हो जो हममे गति और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण हे।"

प्रेमचन्द के आगे की कहानियो ने मानव के अन्तर्द्वन्द्वो को झकझोरा एवं विशेषतः फ्रायडवादी मनोविश्लेषण से प्रभावित रचनाएँ लिखी जाने लगीं, किन्तु इसके आगे कथा-साहित्य में जीवनगत चट्टानी यथार्थ उभरा और उसके अवचेतन मे एक दृढ लालसा, आखिर समाधन है कहाँ?

डॉ. मंजु लता तिवारी की लघुकथाएँ जो कि जीवन को व्यंजित एवं प्रतिफलित करती हैं उनमे जीवन की आशा, निराशा, पिपासा परिलक्षित होती है। नियति, क्रूरता एवं मानवीय विवशताओ को उन्होंने जो स्वर दिया है, वह अप्रतिम है। उनकी प्रत्येक कहानी अपने में औपन्यासिक विस्तार एवं कथात्मक तीक्ष्णता लिये 'सतसैया के दोहरे' है जो आकार मे भले लघु हों, परन्तु प्रभाव में विशाल हैं।

डॉ. तिवारी की इस कृति का साहित्य ससार मे सम्यक् समादर होगा और विश्लेषण भी। मैं उन्हें अपनी शुभ्कामनाएँ देता हूँ इस आशा एव विश्वास के साथ कि उनकी रचनाधर्मी यात्रा निरन्तर नये पड़ाव तय करेगी और मिलती रहेगी साहित्य-संसार को निरन्तर नयी कृतियाँ!

राजभवन, लखनऊ
29 अक्तूबर, 2001

- शंभुनाथ

लघुकथा : एक परिदृश्य

हिन्दी के साहित्यिक जगत में अब लघुकथा एक सशक्त विधा के रूप में उभर रही है। सभी छोटी बडी पत्रिकाएँ, चाहे वे व्यावसायिक हों अथवा अव्यावसायिक, सभी लघुकथा को प्रोत्साहित कर रही हैं। स्थापित एव प्रतिष्ठित रचनाकार अब इस विधा की ओर आकर्षित होकर काफी कुछ लिख-पढ़ रहे हैं। किन्तु लघुकथा को आज भी वह स्थान नहीं मिल सका है, जो साहित्य की अन्य विधाओं को प्राप्त है। संभवत इसका कारण इस विधा का आधुनिक रूप से पाठकों के मध्य पूर्णतया प्रिय न हो पाना है।

साहित्यिक मानदडो पर हिन्दी लघुकथा अपने लघु कलेवर मर्मस्पर्शिता, प्रभावोत्पादकता, सार्थकता आदि गुणों के कारण आज जिस धरातल पर आ खडी हुई है, वहॉ से उसे कोई भी बहस और किसी प्रकार की भी उपेक्षा डिगा नहीं सकती है।

वास्तव मे लघुकथा, साहित्य की एक उपविधा है जो लेखक के अभिप्राय को कहानी के बडे ताने-बाने की अपेक्षा न कर एक सांकेतिक कथानक द्वारा व्यक्त कर देती है।

रामायण या महाभारत की अन्तर्कथाऍ, जातक कथाएँ, अनेक लोक कथाऍ कहानी नहीं कहलातीं। वे सभी लघुकथा के अन्तर्गत ही मानी जा सकती हैं। उन कथाओं के स्वरूप विन्यास और उनमे निहित आशय पर विचार करते हुए निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि लघुकथा किसी सवेद्य सहविचार का सक्षिप्त सोद्देश्य कथपरक अभिव्यक्ति है।

यह निर्विवाद है कि बीसवीं सदी के समाप्त होने तक लघुकथा अपनी जड़ें साहित्य जगत में जमा चुकी थी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पुस्तिका 'परिहासिनी' को यदि चुटकुला प्रधान भी लें तो सन् 1900 के आस-पास लिखी गयी माखनलल चतुर्वेदी की लघुकथा "बिल्ली और बुखार" पर भी चर्चा हो सकती है, किन्तु 1901 में लिखी गयी माधवराव सप्रे की लघुकथा 'एक टिकरी मिट्टी' से लघुकथा का प्रारम्भ स्वीकार किया जा सकता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य की परम्परा में उबरने वाली लघुकथा है छबीलेलाल गोस्वामी की 'विमाता'। इसमें किंचित मात्र भी अंग्रेजी कथा का प्रभाव नहीं है, यद्यपि उस समय तक पूरे भारत में अंग्रेजी और अंग्रेजों का राज्य व्यापक हो चुका था। सौतेली माँ की परम्परागत छवि को न छेड़ते हुए भी कथाकार ने एक पृथक ही अन्दाज में एक प्रभावशाली लघुकथा का सृजन बीसवीं सदी के दूसरे दशक में कर दिया था।

कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर", रावी तथा आनंद मोहन अवस्थी के "लघुकथा" संग्रहों ने १९५० के आस-पास इस दिशा में हलचल तो मचाई, पर वह अपनी विशेष छाप नहीं छोड़ सके। इतना अवश्य माना जा सकता है कि इनके प्रयास से लघुकथा मे गति आई।

प्रसाद जी की लघु कथाएँ प्रेमचन्द की तुलना में कुछ पुरानी अवश्य हैं, किन्तु उनकी लघुकथा "कलावती की शिक्षा" ने स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को बड़े सहज रूप में व्याख्यापित किया है। उसी प्रकार प्रेमचन्द की लगभग तीन सौ कहानियों में से पैंतिस कहानियों को लघुकथा की संज्ञा दे सकते हैं। प्रेमचन्द जी के समय लघुकथा, लघुकहानी और लघु व्यंग्य को अलग से स्थापित करने की बात उठी थी, यह विवाद कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर की लघुकथाओं को लेकर उठी। अज्ञेय ने इनकी लघुकथाओं को छोटी कहानी के रूप में हिन्दी को नई देन कहा था। यह छोटी कहानियाँ आधुनिक हिन्दी लघु कथा की नींव है, जिन पर उनका प्रसाद खड़ा है।

राजेन्द्र यादव ने हंस के माध्यम से अनेक लघुकथाओं का प्रकाशन किया है। उनकी लघुकथा "हनीमून" को हिन्दी की प्रारम्भिक पन्द्रह श्रेष्ठ लघुकथाओं मे गिना जा सकता है। पृथ्वीराज, बलराम, रमेश बतरा, राजकुमार मधुकान्त, विकल सोनी आदि के सतत् लेखन से लघुकथा उत्तरोत्तर प्रगति कर रही है।

नवें दशक के रचनाकार पर्याप्त सतर्क हैं। प्रत्येक रचनाकार ने अपनी लघुकथाओं में वर्तमान के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक पक्षों का यथार्थ चित्रण किया है। इनकी रचनाएँ मात्र तिलमिलाहट ही नहीं उत्पन्न करतीं बल्कि वास्तविकता के अत्यन्त निकट खींच ले जाती हैं और नग्न यथार्थ से हमारा परिचय कराती हैं।

लघुकथाएँ समाज में व्याप्त स्वार्थ, तिरस्कार, शोषण, अमानवीयता आदि को हमारे समक्ष उद्घाटित कर विचलित कर देती है। नवें दशक में जिन रचनाकारों ने पाठकों को प्रभावित किया है उनमें सुरेश सहानी, पवन वर्मा, निर्मला सिंह, अमित

ग्नन्द डॉ महेश उपाध्याय राकेश प्रवीण जलाल रहमद, कुलदीप जन, डॉ रमाकान्त श्रीवास्तव, श्री बलराम अग्रवाल आदि प्रमुख है।

विगत दशको की लघु कथाओं की तुलना करने पर आज विकास के सोपान तेजी से बढ़ते दिखाई दे रहे है। युगबोध से साक्षात्कार, अनुभवों की उर्वरता अनुभूति की सघनता एव सवेदना का सश्लिष्ट प्रभाव लघुकथा को संचेतना की और भी दृढ़ कर रहे हैं।

लघुकथा ''मुखौटा'' में आज के मुखौटों की सच्ची तस्वीर देखने को मिलती है- ''वह जीवन के शिखर पर शीघ्र पहुँचने को आतुर था तथा हर हथकडा अपनाने को तैयार था, जो जिस अभिरुचि का होता, उसके सामने वैसा ही अभिनय कर देता, वह उन्नति की सीढ़ियों तो चढ रहा था परन्तु अपनी प्रगति से असतुष्ट था।''

उसका एक मित्र जीवन की दोड़ में सबसे आगे था। जब उससे उसने अपना दुखड़ा रोया तो उसने परामर्श दिया। दोस्त, चेहरा तो फिर भी चेहरा है, लाख अभिनय करो, फिर भी कुछ न कुछ बोलता ही है मुखौटे तुरन्त आसानी से बदले जा सकते हैं तथा सफलता की कारगर सीढ़ियाँ भी हैं . . अब प्रगति की दौड में, वह अपने मित्र से भी आगे था, क्योंकि उसने अपने मित्र का मुखौटा भी तो खरीद लिया था। थोड़े से शब्दों में यह कहानी आज की व्यवस्था में विचलित चरित्र का मार्मिक उद्घाटन कर देती है। ऐसी सूक्ष्मता ही लघुकथा की विशेषता है।

मानव जीवन तरह-तरह के अन्तर्विरोधों से जूझता है, उसका बाहरी संसार से भी जुड़ाव कम नहीं है। नदी, पर्वत, पशु-पक्षी, राग-द्वेष सभी उसके मन से जुड़े हैं। वह मानव होकर भी इन मानवेतर पात्रों से जुडा है। वह गतिशील होकर भी इन स्थिर अमूर्त का सगा संबधी है। विश्व की अनेक लघुकथऍ ऐसे पात्रो से जुडी हैं। डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव ने अपनी ''मर्यादा'' कथा में इन अमूर्त पात्रों के माध्यम से गहरी चोट की है, ''नदी की धारा स्थिर जड़ और मूक कगार से बोली'', तुम्हारा अस्तित्व ही निरर्थक है। जो गतिशील नहीं, उसकी क्या उपयोगिता है। देखो न, मैं निरन्तर-चलती रहती हूॅ, उस सागर से मिलने के लिए जो मर्यादित है, जिसे मुझसे मिलने के लिए हर पल तड़प रहती है और जिसकी अभिव्यक्ति ज्वार-भाटे के रूप में होती रहती है।

ठीक कहती हो, जड कगार बोला, किन्तु तुम्हारे इस कथन में सच्चाई नहीं है कि मैं निरर्थक हूँ। सच तो यह है कि मै ही तुम्हें मर्यादित रखता हूॅ, सागर से मिलने

के लिए दिशा निर्देश करता हूं यदि मैं न रहूं, तो तुम दिशाहीन होकर भटक जाओगे सागर से मिलने की तुम्हारी आकांक्षाएँ अपूर्ण रह जाए।

नदी की धारा कगार के इस उत्तर से निरुत्तर हो गयी।

लघु कथाएँ देखे-सुने यथार्थ की कथ्यात्मक परिणति है। आज का समाज जिस त्रासदी को भोग रहा है, जिन आशाओं, निराशाओं, विषमताओं और कुंठाओं को जी रहा है, जिस अनपेक्षित को देख सुन रहा है, वहीं तिलमिलाहट लघुकथा में व्यक्त हो रही है। आज आदमी इन कहानियों में अपने जीवन के प्रतिबिम्ब देखता है। उसमें वर्णित घटनाएँ उसे अपने आस-पास की भोगी गयी घटनाएँ लगती है। माँगीलाल यादव की एक कथा में एक वृद्ध निर्धन अपनी कन्या के अपहरण से आकुल है। पुलिस से सहायता मिलने की प्रत्याशा में वह परिहास का विषय बना हुआ है। फिर भी दरोगा में संवेदना नहीं है। तिलमिला उठता है वृद्धा मन। इस लघुकथा को पढ़कर पाठक को आक्रोश हो उठता है। समाज के चौकीदारों की इस मानसिकता से रामयतन प्रसाद यादव की "राहत अधिकारी" में अनाज का भण्डार देखकर पुत्र अपने सरकारी अधिकारी पिता से पूछ बैठता है "क्या फिर बाढ़ आने का अंदेशा है।" सत्येश की गुरु दक्षिणा में एक निष्ठावान अभियन्ता को उच्च अधिकारी, ट्रान्सफर करा देना चाहते है। इस बात का पता चलते ही वह अपने चीफ के पास जाता है- लिफाफा अर्पित किये जाने पर वह अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। मार्गदर्शन भी वह करते हैं कि इसी तरह ईमानदारी और निष्ठा से काम करते रहो, विभाग की छवि नहीं बिगडनी चाहिए।

अनेक पत्रिकाएँ लघुकथा विशेषांक निकाल रही है। भारत की अन्य भाषाएँ सिंधी, कश्मीरी, डोगरी, भोजपुरी, अवधी, बंगला, गुजराती, आदि में तेजी से लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं। बलराम अग्रवाल ने "हिन्दी लघुकथा कोश" और "विश्व लघुकथा कोष", का सम्पादन किया है। आकाशवाणी, दूरदर्शन भी लघुकथा को स्थान दे रहे हैं। इससे यह तो निश्चित है कि लघुकथा का भविष्य उज्जवल है। तथापि सर्जनात्मक कलात्मकता के संदर्भ में अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है।

लघुकथा को अनुवाद के माध्यम से अन्य देशों तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। प्राचीन आख्यानों को भी आधुनकि संदर्भ में पैनेपन के साथ लिखा जा रहा है। परन्तु व्यग्य और गम्भीरता साथ नहीं चल सकते। समकालीन मुद्दो से जुड़ना आधुनिक युग की माँग है। 21वीं सदी मे प्रवेश के साथ ही लघुकथा से अपेक्षाएं भी बढ़ जायेंगी। पाठकों की सोच को नए धरातल से जोडना होगा।

आगत समय म लघुकथाओ का भविष्य उज्जवल होगा यदि चुटकुले तथा हल्की सामग्री को इसके अन्तर्गत न रखकर नए नए प्रयोग कर संवेदना के धरातल पर इसे लाया जाए, तभी यह लोकप्रिय भी हो सकेगी।

आज लघुकथा के सामने यह चुनौती है कि वह अपने युग के सदर्भों को कितनी सक्षमता, सार्थकता और सफलता से साथ कथा की वस्तु बना पा रही है। बड़ी कहानियो की कथात्मकता पाठकों को बॉधती है। उसमे बड़े घटनाक्रम, चरित्र चित्रण, सवाद और परिवेश को चित्रित करने की गुंजाइश होती है।

लघुकथा में कलेवर की सीमा है। इसलिये इसमें पात्र और घटनाएँ प्रतीकात्मक रूप में उपस्थित होती है जो लेखक के बडे आशय के उद्घाटन की कुंजी का काम करते है। स्पष्ट है कि लघुकथा व्यजनापरक भाषा अपनाकर भी सपाट कथा नहीं कह सकती। उसकी शैली सकेत प्रधान सोद्देश्य होती है। इसलिये लघुकथा विशेष शिल्पलाधव की अपेक्षा रखती है। अपने इसी शिल्प के साथ वह साहित्य में एक सशक्त विधा के रूप मे स्थापित हो सकती है। आज के लघुकथा लेखक इस दिशा में विशेष सचेष्ट दिखाई देते हैं।

आपने लेखन पर मुझे अधिक कुछ नहीं कहना है। मैं अपने उद्देश्य में कहा तक सफल हो सकी हूँ यह निर्णय पाठको को ही करना है।

दीपावली

23 कार्तिक, 2001

डॉ. मजु लता तिवारी

अनुक्रमणिका

क्रम.	शीर्षक	पृष्ठ
34	हाथी के दाँत	36
35	वैभव	37
36	अर्द्धांग	38
37	बड़े लोग	39
38	घोंसला	40
39	ताला	41
40	दाग	42
41	मास्टर दशरथ	43
42	चयन	44
43	राधा	45
44	विरासत की सोच	46
45	देवता	47
46	दृष्टिबोध	48
47	आंकड़ा	49
48	मॉर्डिनिटी	50
49	हवाई यात्रा	49
50	सरकारी नौकरी	50
51.	पशु-संस्थान	51
52.	सफलता की कुंजी	52

●●●

अन्तर

ऑफिस से लौटते ही आशीष जी अपने बेटे अकुर पर बरस पडे 'तुम्हें शर्म नहीं आती, मेरे चपरासी के बेटे के साथ खेलते हुए, मेरी नाक सबके सामने कटवाकर रख दी।'

"डैडी, ऐसी क्या बुराई है रामू में" बुराई रामू में नहीं बल्कि उसके पिता श्यामू में है। वह गरीब है, चपरासी है, ओर आप एक आई.ए.एस. के बेटे हैं बस सिर्फ इतनी ही बात होती तब भी ठीक था, किन्तु श्यामू शराबी है, रात-रात भर नचनियों का नाच देखता है। पर डैडी आप भी तो शराब पीते है, नाच भी देखते हैं, घर भी देर रात तक आते है, पर आपको तो श्यामू ने कुछ नहीं कहा।

'चुप, अपनी मॉ की तरह बहस करता है। जानता नहीं श्यामू ठर्रा पीता है। और मैं व्हिस्की, श्यामू वेश्या का नाच देखता है और मैं होटलों में कैबरे डास देखता हूॅ। तुझे अभी तक देशी-विदेशी में अन्तर नहीं पता' 'समझ गया डैडी, श्यामू पिताजी है, ओर आप डैडी।'

●●●

चुनाव

रामपुर मे दो दिन बाद वोट पडने वाला था, पर पूरा गाँव एक गहरे सन्नाटे में था। तभी अंधेरे को चीरती हुयी एक जीप तेजी से गाँव मे घुसी। जीप की आवाज सुनकर कुछ घरों की बत्ती दिखायी पड़ने लगी।

अंधेरा देखकर विधायक जी चिल्लाए यहा तो सभी चैन की नींद सो रहे है, कहीं से कोई चीख पुकार की आवाज नहीं आ रही है। मैं सभी को देख लूगा। आखिर मैने इतना रुपया मरने और मारने के लिए ही तो दिया था।

उसी समय ग्राम प्रधान भैलू जी बोल पडे ''विधायक जी, बढती महँगाई में जिन्दगी के भाव भी तो बढ गए हैं, आखिर दस बीस हजार में आज कल होता ही क्या है।'' ''ठीक है, ठीक है, जिन्दगी के जो रेट अन्य विधायकों ने अपने क्षेत्र मे बॉटे होंगे, उससे अधिक मैं दूँगा।

दो दिन बाद चुनाव हुआ। खबर छपी, दस व्यक्ति मौकाए वारदात पर मारे गये, पचास लोग बूथ लूटने के अपराध में पकड़े गए। स्थिति नियंत्रण में है, कहीं से कोई अप्रिय घटना की सूचना नहीं है। जिलाधिकारी का स्थानान्तरण कर दिया गया है।

विधायक हरिराम जी भारी बहुमत से विजयी घोषित।

●●●

प्रमोशन

आज अचानक अरुण का प्रमोशन हो जाने के कारण कार्यालय मे आपस मे कानाफूसी जोरों मे हो रही थी। निदेशक कक्ष मे भी मजमा जुटा हुआ था, वह लोगों को सफाई दे रहे थे कि मैं क्या करता ऊपर से आदेश थे इस लिए मुझे मजबूरी मैं अरुण का प्रमोशन करना पड़ा। तभी सामने का दरवाजा खुला और अरुण मिठाई के डिब्बे के साथ कमरे मे दाखिल हुआ, और कहा– "सर आज कम से कम दो मिठाई तो खाइये।" "क्या जरूरी है"।

"हाँ सर, एक मेरे प्रमोशन की दूसरी आपके द्वारा की गयी मेहरबानी की" "और जो मैंने तुम्हारे ऊपर लगे गम्भीर आरोपों को निरस्त किया उसको भूल गये।"

"यह कैसे हो सकता है, आपके शौक क्या हैं। मुझे पता है, आज रात होटल मे मैंने सारी व्यवस्थाएं कर दी है" "शाबाश, नौजवान हो, आज की जरूरतों को समझते हो। पर ध्यान रखना बात कहीं खुले नहीं" "नहीं सर, मैं कोई कच्ची गोली नहीं खेला हूँ।"

बड़े बाबू जो वहीं फाइल लिए खड़े थे, सोच रहे थे कि उनका प्रमोशन सपना बनकर ही रह जायेगा, तभी साहब ने उनसे कहा "बडे बाबू आपने सुना कुछ, आप भी व्यवस्था में जुट जाइये नहीं तो. ..."

बड़े बाबू ने अपना मोटा चश्मा उठाया। फाइल लिए अपने कक्ष में उदास मन से बैठ गए। काम में मन नहीं लगा, साइकिल उठायी और व्यवस्थाओं के बारे में सोचते हुए घर की ओर मुडे, ध्यान कहीं और होने के कारण साइकिल खभे से टकरा गयी, गम्भीर चोट लगने के कारण वह अस्पताल में भर्ती हो गए और उनका प्रमोशन सपना बनकर रह गया।

●●●

मैडम

मैडम मुझे आपसे कुछ कहना है। "हॉ हॉ बोलो, मेरी। तुम इतनी देर से खड़ी हो कुछ बोली भी नहीं।"

"क्या करती सबके बीच में बोलने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी।" "ऐसी भी क्या बात है?"

"मैम, मुझे आज कुछ रुपयों की सख्त जरूरत है।" "पर अभी ही तुम्हें वेतन मिला है क्या तुमने पूरा खर्च कर डाला।"

"मैम उतने पैसे तो बस में आने जाने में ही खर्च हो जाते हैं।"

"पर तुम्हें तो छ हजार रुपये मिलते हैं।"

"ठीक है जरूरत सबको पड़ती है।"

"यह दो सौ रुपये रख लो।"

"नहीं मैम मुझे अपने वेतन के पूरे रुपये चाहिए।"

तभी बड़े बाबू शिवचरण जी बोल उठे- "तुम्हें अभी दो महीने यहाँ आए हुए, और मैडम से जबान लड़ाती हो। यही क्या कम है कि मैम ने तुमसे बिना कोई लाभ लिए, तरस खाकर तुम्हे नौकरी दे दी।"

"मैं सब कुछ समझ गयी, कल से मैम आपके घर का खाना मैं ही बना दिया करूँगी।" "गूड गर्ल",

"शिवचरण जी, आप गलत काम क्यों करते हैं, अगले महीने से मेरी की तनख्वाह पूरी दिया करिए।" "मेरी कल से रास्ते से सब्जी भी तुम्हीं लेती आया करो, दफ्तर का काम शकर देख लेगा।"

●●●

प्रश्न

लडका, लड़की देखने आया था। उसने लड़की के सामने प्रश्नों की झड़ी लगा दी थी।

''भरतनाट्यम के विषय में आप क्या जानती हैं?'' 'कुछ नहीं'' लडकी ने सकुचाते हुए उत्तर दिया।

लड़के ने व्यंग्य में पूछा ''आप कम्प्यूटर के विषय में भी नहीं जानती होंगी,'' 'सही कहा आपने, मैं इस विषय में तो बिल्कुल ही अनभिज्ञ हूॅ।''

चलिए कोई बात नहीं अब कुछ साहित्य के विषय में ही चर्चा की जाय- शैली और कीट्स ने किस प्रकार की कविताए लिखी हैं?

''शायद मैं आपके इस प्रकार के किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकूंगी, पर यदि आप इजाजत दें तो मैं भी कुछ पूछॅू'' ''क्यों नहीं'' लड़के ने गर्व से कहा।

''बच्चे को दूध दिन में कितनी बार पिलाना चाहिए? ''यह तो मैं नहीं बता पाऊॅगा।'' ठीक है।

''यदि कुकर मे चावल पकाना हो तो, कितनी सीटी में बद करना चाहिए।'' ''यह क्या तुम बेवकूफी भरे प्रश्न मुझसे पूछ रही हो।''

''यह तो मात्र आपके प्रश्नो का उत्तर था'', अब लड़ीकी गर्व से मुस्करा रही थी।

●●●

मित्र

शेखर और विनोद दोनों ही पिता को लेने स्टेशन जा रहे थे, पर अलग-अलग। गाड़ी ठीक समय पर आ गयी। विनोद पिता को लेने ए.सी कार की ओर बढ़ रहा था, पर शेखर ठिठका खड़ा था क्योंकि वह स्वय विद्युत अभियन्ता और पिता किसान। ऊँची धोती लाल अंगौछे वाले। विनोद ऑफिस मे जाकर सबके बीच हँसी उडायेगा।

जब शेखर ने देखा कि स्टेशन पर कोई जानने वाला नहीं है तब पिता की ओर बढा, चरण स्पर्श किए, और कहा- "पिता जी भीड में मैं आपको देख न हीं सका।" "नहीं बेटा कोई बात नहीं मै तो तुम्हे देख रहा था, पर स्वय पास नहीं आया, तुम्हारी पोजीशन का मुझे पूरा ख्याल है।"

स्टेशन के बाहर निकलने पर विनोद के पिता दिख गये, दौडकर शेखर के पिता के गले मिले और कहने लगे- "मित्र, आज के दिन तो हम लोग साथ ही रहेगे आखिर वर्षों बाद मिले भी तो है।" शेखर क्या बोलता उन दो मित्रों के सामने उसे अपनी पोजीशन बौनी लगने लगी।

●●●

अनुत्तरित प्रश्न

शहनाई के गूंजने के साथ रेखा का बहू के रूप में गृह प्रवेश।

एक घण्टे बाद ही सुधांशु का कारगिल के लिए रवाना होना।

सभी कुछ एक साथ घटित।

टी वी. पर विजय अभियान की सूचना पाकर पत्नी और पिता गद्गद् हृदय।

एक सुखद कल्पना की अनुभूति।

किन्तु दो दिन बाद ही प्रतीक्षा में मिली मातमी बैण्ड के साथ बड़े से डिब्बे में बद "सुधांशु" की लाश और उसके साथ ही लपलपाते कुर्ते पाजामें पहने नेताओं की लम्बी भीड के साथ मुख्यमत्री द्वारा दिया गया दस लाख का चेक।

क्या सुधांशु का यही मोल है।

पर इनमे से क्या कोई लौटा सकेगा रेखा के मॉग का सिन्दूर।

ऐसा साहस कर सकेगा कोई वीर।

भीड में एक मर्मभेदी सन्नाटा।

●●●

अधिकार

माँ की बीमारी की सूचना मिलते ही प्रिया तुरन्त माँ को देखने चल दी। उसके घर पहुँचते ही उसका भाई रोहित और भाभी अनन्या उठ खड़ी हुयी ओर बोली "प्रिया हम लोग सारे दिन माँ के पास बैठे-बैठे बोर हो गये हैं, अब हम अपने कमरे में जाकर टी वी. देखेंगे ओर चैन की सांस लेंगे।" प्रिया भौचक्की रह गयी, रोहित ने प्रिया से चाय के लिए भी नहीं पूछा।

जब माँ ने देखा, प्रिया का मुँह सूखा हुआ है, किसी ने उसे चाय तक के लिए नहीं पूछा, माँ ने कहा "जा बेटी चाय बना ले, तेरे हाथ की चाय पिए बहुत दिन हो गए।"

माँ की नींद जब आधी रात को खुली तो देखा प्रिया कुर्सी पर ही अधलेटी हाथ में किताब लिए जाग रही है। बेटी तू सोयी नहीं, "नहीं माँ, कहीं तुमने आवाज लगायी और मेरी नींद नहीं खुल पायी तब," "माँ तुम्हें कब दवा देनी है, भइया को जगा दूँ।" "नहीं बेटी, जगाने पर रोहित घर सर पर उठा लेगा।"

प्रिया सोचने लगी यही माँ न जाने रोहित के लिए कितनी रातें जागी होगी, और आज वहीं रोहित माँ के लिए एक रात नहीं जाग सकता।

सुबह जब प्रिया माँ के लिए चाय बनाकर लायी, माँ के प्राण पखेरू उड़ चुके थे। प्रिया की चीख सुनकर रोहित और अनन्या दौड़े आए। देखा माँ की उगली से पुखराज की अगूठी गायब है। आनन्या कड़ककर बोली- "प्रिया अंगूठी कहा है।" "तकिए के नीचे। भाभी, मैं भला बेटे का अधिकार कैसे ले सकती हूँ, मेरे हिस्से में माँ के आँसू ही बहुत हैं। आखिर बेटी जो हूँ।"

माँ

वर्षों से संजोई मालती की आस आज पूरी होने वाली थी। उसके घर वहू आ रही थी, वह भी आई.ए.एस. की बेटी। मालती का घर आधुनकि सामानो से भर उठेगा।

वह शुभ घड़ी भी आ गयी। नारियल फोडा गया, बहू बेटे की आरती उतारी और वधू प्रवेश हुआ। सारे दिन घर में पड़ोसिनें जमी रहीं और मालती से पूछती "अरे हमें भी तो दिखाओं बहू दहेज में क्या क्या लाई है।" मालती क्या दिखाती वह तो स्वयं दहेज से भरे ट्रक की प्रतीक्षा सारे दिन कर रही थी।

जब रात तक कुछ नहीं दिखा तब मालती के सब्र का बाँध टूट गया, उसने वहू से पूछ ही लिया, बहू का उत्तर मिला "मॉ जी वह सब सामान तो मेरे पापा ने मुझे दिया था न कि आपको। एक बार सारा सामान यहॉ आता और बाद में आगरा, जहॉ इनकी पोस्टिंग होने वाली है, तो खर्चा भी ज्यादा होता।"

"ओह तो क्या बेटे ने बदली भी करवा ली है।" "माँ जी क्या इन्होंने आपको वताया नहीं।" यह प्रस्ताव तो इनका ही था, कहते थे "रात भर बाबू जी खॉसते हैं ओर अम्मा को दमा है, मैं अब और साथ नहीं रह सकता" "पर बेटी हमें तो आज भी बेटे के सिगरेट का धुआ, जिससे सभी को घुटन सी लगती हे, अगरबत्ती की खुशबू जैसी लगती है।

●●●

नेता

नेता जी लपलपाता हुआ सफेद कुर्ता धोती पहने जोरदार आवाज मे अपने देशभक्त होने का प्रमाण जनता को दे रहे थे। उन्होंने कहा, "जब मैं सत्ता में आऊँगा तब विदेशी कोई वस्तु आयात नहीं होगी, अंग्रेजी तो मैं पूरे भारत से मिटाकर रहूँगा, बस आपका सपोर्ट मिलते रहना चाहिए" जनता ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

नेता जी विश्राम हेतु सरकिट हाऊस पहुँचे। फ्रिज में बोतले सजी थी। फ्रिज खोलते ही नेता जी उत्तेजित हो उठे, क्योंकि बोतलों का लेविल देसी, था, वह चीखकर बोले "व्हाट नॉनसेन्स, तुम लोगों को आज तक मालूम नहीं हुआ कि मैं देशी शराब नहीं पीता, तुम सब गैर जिम्मेदार हो। कल से मैं तुम्हारी जगह जोजफ को रख लूगा।"

बगल में ही उनके पी.ए. खडे थे, उन्होंने हिम्मत करे कहा "साहब अभी थोडी देर पहले पब्लिक मीटिंग में आपने कहा था कि विदेशी मूल का व्यक्ति या वस्तु कुछ भी स्वीकार नहीं की जायेगी।"

यह सुनते ही मत्री जी बोले "बेवकूफ कहीं के, यह बस तो भाषण की बाते हैं, बिना विदेशी वस्तु और भाषा अपनाए कोई अन्तर्राष्ट्रीय नेता नहीं वन सकता।"

•••

कलियुग का कृष्ण

सत्ताधारी एक नेता जी के आवास पर जनता की भीड लगी थी। उसी भीड़ में एक युवती भी कोने में दुबकी हुयी खडी थी वह हिम्मत नहीं कर पा रही थी किस प्रकार नेता जी तक पहुँचे।

जब नेता जी कहीं बाहर जाने के लिए कुर्सी से उटे, उनकी दृष्टि युवती पर पड़ी वह स्वयं ही भीड़ को चीरते हुए युवती के पास गए, उससे आने का कारण पूछा, युवती बोली "पति नहीं रहे परिवार की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है, अगर कहीं छोटी मोटी नौकरी लग जाती, जो गुजर बसर हो जाता।" नेता जी ने युवती के प्रति सहानुभूति जताई ओर उसे शाम को डाक बंगले में आने को कहा।

युवती दूसरे दिन प्रसन्न भाव से डाक बंगले गई, वहां सन्नाटा था, केवल सन्तरी बाहर खड़ा था सकुचाते हुए युवती ने दरवाजा खोला। नेता जी जैसे उसके ही इन्तजार में बेटे थे। युवती को पलंग पर बिठा लिया।

कमरे से चीख की आवाज सुनकर सन्तरी दौड़ा आया। नेता जी की मुद्रा देखकर उसका खून खौल उठा। उसे नौकरी की परवाह न करके युवती की शील रक्षा हेतु बन्दूक चला दी। दोनों ओर से धांय-धांय की आवाज हुयी। युवती ने किसी तरह वहां से भाग कर अपनी रक्षा कर ली पर सन्तरी मारा गया।

मंत्री जी ने युवती का मुँह बंद करने के लिए नौकरी के साथ-साथ मुँहमांगी रकम भी दी। थानेदार आए, युवती ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि "सन्तरी मेरा शीलहरण करना चाहता था, मेरी रक्षा हेतु मंत्री जी ने उसे गोली मार दी।"

इस घटना के बाद मंत्री जी के नेक नियति के गुण गाये जाने लगे। वह युवती भी कैबिनेट मंत्री बनाई गयी पर "कलियुग का कृष्ण" मारा गया।

•••

पत्नी

विनय अपनी माँ की जिद के कारण जिससे प्यार करता था उससे विवाह नहीं कर सका। विवाह की प्रथम रात्रि के ही दिन विनय ने पत्नी से कहा "ममता, मैंने अपनी माँ का दिल रखने के लिए तुमसे विवाह तो कर लिया, पर मैं तुम्हें कभी पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता।"

ममता के सारे सपने एक मिनट में ही चकनाचूर हो गए, वह विनय से बोली "तुमने क्या पत्नी को खिलौना समझ रखा है, मैं तुम्हारे घर में पत्नी बनकर आयी हूँ और पत्नी बनकर ही रहूँगी।"

समय बीतता रहा, विनय तरह-तरह से ममता को प्रताड़ित करता रहा, जिससे ममता तंग आकर स्वय विनय को छोड़ दे। पर जब ममता किसी तरह नहीं झुकी, तब विनय ने चाल चली। विनय ममता को किसी तरह बहलाकर अपने दोस्त के घर ले गया, वहां उसने अपनी प्रेमिका शशि को भी बुला रखा था, उसी के सम्मुख विनय ने ममता को तलाकनामें के कागज पर हस्ताक्षर करने को कहा, और शशि की माँग में सिन्दूर भर दिया।

ममता पहले से ही इस योजना के अदेशे में थी उसने तुरन्त विनय से प्रेमपूर्वक कहा- "अब तो तुम मुझे अपने से अलग कर ही रहे हो, आखिरी बार एक कप चाय अपने हाथ से पिला दो" विनय ने सोचा समझौता बहुत सस्ता है। वह किचन में जैसे ही लाइटर जला रहा था, ममता ने गेस का पाइप खींच दिया, किचन में आग लग गयी। शशि यह दूर खड़ी सब देख रही थी, विनय का शरीर आधा जल चुका था।

जब विनय चीखते चिल्लाते शशि की ओर भागा तब शशि ने कहा "मैं कोई बेवकूफ नहीं हू, अब तुम्हारे पास रखा ही क्या है? न रंग न रूप और न ही नौकरी।"

आग से झुलसा हुआ विनय दर्द से कराहता रहा, पर शशि ने विनय को स्वीकार नहीं किया। शशि ने विनय के ही दोस्त से शादी कर ली थी, ममता ने नौकरी कर ली थी, विनय की सेवा करके वह पत्नी का हक अदा कर रही थी।

•••

मीता

गुप्ता जी जीवन की अन्तिम साँसे ले रहे थे, राजू, अर्पिता और मीना सहमे हुए माँ से चिपककर पिता की ओर निहार रहे थे। तभी गुप्ता जी ने बड़ी बेटी मीता को इशारे से अपनी ओर बुलाया ओर बुदबुदाते हुए कहा- "बेटी मैं तुम्हारे कन्धे पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी सौंपकर जा रहा हूँ, जिसे तुम्हें पूरा करना है" और उन्होंने सदा के लिए आँखे बद कर ली। मीता एकाएक अपने कद से बहुत बडी हो गयी।

मीता को पिता के ही दफ्तर में नौकरी मिल गयी। राजू ओर अर्पिता की पढाई भी चलती रही, वह अपनी ओर से घर में कोई कमी नहीं होने देती थी। दफ्तर से लौटते समय रास्ते में साग-सब्जी का थैला उसके कधे पर होता। माँ ने कभी सोचा नहीं कि मीता की भी अपनी कोई जिन्दगी है।

मीता मशीनी ज़िंदगी ढोते-ढोते ऊब चुकी थी। उसका सहकर्मी सुशील कई बार उससे विवाह करने का प्रस्ताव भी कर चुका था, पर मीता को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास था, इसीलिए वह सुशील को नकारती रही। पर कब तक। अब तो राजू ने अपनी पढ़ाई भी पूरी कर ली थी। आज नहीं तो कल उसे नौकरी मिल ही जायेगी। फिर वह क्यो न सुशील के प्रस्ताव को मानकर, अपनी गृहस्थी बसा ले।

आज जब सुशील उसे स्कूटर से घर छोड़ने आया। मीता ने उसे एक कप चाय के बहाने रोक लिया। इसी बहाने वह सुशील के विषय में माँ की राय भी जान लेगी।

किचन में मीता ने चाय बनाने के लिए जैसे ही दूध का भगोना खोला, भगोना खाली था। माँ से पूछा तो उत्तर मिला "तू कमाती है तो क्या तुझे हर एक चीज का हिसाब देना होगा, घर में बच्चे हैं, पी लिया होगा, तेरे जितना हिसाब तो, तेरा बाप भी मुझसे नहीं लेता था।" सुशील ने यह सब सुन लिया, और बिना बताए उठकर चल दिया।

थोडी देर मे मीता ने देखा कि अर्पिता दिनेश के साथ अन्दर आ रही थी। माँ उन्हें

एक साथ देख कर खुश हुया ओर मीता से बोली "बेटी अर्पित और दिनेश की जोड़ी कितनी सुन्दर है, अगर तू रुपये की व्यवस्था कर दे ते मैं हाँ कह दू, आखिर यह जिम्मेदारी भी तो तेरी ही तो है।" मीना स्तब्ध होकर माँ की ओर देखने लगी, बिना कुछ उत्तर दिये, उसने पाँव में चप्पल डाली और थैला कधे पर डाल कर निकल गयी। सुशील गेट के बाहर खड़ा था। उसने झट से मीता का थैला ले लिया और बोला- "यह बोझ तो हम दोनों का है केवल मीता का नहीं।"

सहारा पा कर मीता की ऑखों से अश्रुधारा बह निकली। शायद उसे आज अपने नाम का सच्चा अर्थ पता चला था।

* * *

विडम्बना

बड़ी उमस भरी गर्मी थी, पंजाब मेल यात्रियों से ठसाठस भरी हुई थी। कुछ युवकों ने डिब्बे को अपना घर समझ रक्खा था, पैर फैलाए नेताओं को गरिया रहे थे।

गाड़ी वाराणसी स्टेशन पर रुकी। एक बहुत बुजुर्ग बुढ़िया हॉफते हुए डिब्बे में किसी तरह चढ़ी। उसने बडे विनम्रतापूर्वक कहा "बेटा, जरा पैर समेट लो तो हमें भी पांव रखने की जगह मिल जाय।" उत्तर में लड़को ने झिड़कते हुए कहा "अक्ल नहीं है क्या. तू हमारे बीच बैठेगी, चुपचाप फर्श पर बैठ जा" बुढ़िया विवश होकर फर्श पर ही बैठ गयी।

गार्ड ने सीटी दे दी, तभी एक सुन्दर सी नवयौवना दौडती हुई उसी डिब्बे में आयी। लडके उसे देखते हुए उठ खडे हुए और बोले "मैडम, आप इधर ही बैठ जाइये, हमारा क्या, हम तो खडे होकर भी यात्रा कर सकते हैं।

युवती ने बैग सीट पर रख दिया। युवती ने मैगजीन निकाला और पैर पसारकर बैठ गयी, उसकी आज की यात्रा की चाय, खाना-पीना सब मुफ्त, नवयौवना को यह सुविधा तो मिलनी ही चाहिए।

लडके उसका सान्निध्य पाकर अपने को धन्य कर रहे थे। बुढ़िया उनके चप्पलों का तकिया बनाकर खर्राटे ले रही थी।

●●●

फर्ज

अधेरी रात मे अजनबी दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। घर में बुढ़िया और उसकी जवान बेटी अकेले ही रहती थी। बुढ़िया ने डरते और सहमते हुए दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही अजनबी घुस आया। तभी सामने से कई पुलिसवालो के घोडे के टाप सुनायी देने लगे। अजनबी पर खतरा देखकर बुढ़िया ने उसे छुपा दिया।

पुलिस वाले बुढ़िया को डाटते मारते हुए पूछने लगे "कहां छुपा रखा है, मेरे दुश्मन को।"

बुढिया के जवाब न देने पर पुलिसवाले उसे धक्का देकर अजनबी की खोज करने लगे। अजनबी तो उसे नहीं मिल सका पर बुढिया की जवान बेटी उन्हें दिख गयी पुलिसवाले उसे ही जबरदस्ती उठा कर ले जाने लगे।

अजनबी छुपकर यह सब देख रहा थ। उसने वहाँ से गोलियां वरसानी शुरू कर दी। बुढिया की बेटी को उसने पुलिस के चगुल से छुड़ा लिया, पर वह स्वय को न बचा सका।

जब वह अन्तिम सांसे ले रहा था तब बुढ़िया ने दुखी होकर कहा-"बेटा, तुमने अपनी जान की बाजी क्यों लगा दी।" अजनबी जवान ने कराहते हुए कहा "मॉ, देश के जवानों का एक यह भी फर्ज है कि वह मॉ बहनों की इज्जत की रक्षा करे, मैंने केवल अपने कर्त्तव्य का पालन किया है।"

●●●

अनमोल खजाना

सुकृति दो वर्ष बाद मायके आयी थी। स्नेहातिरेक के कारण उसके ऑसू वहने लगे, वह मॉ के गले लगकर कहने लगी "बाबू, आपका दिया हुआ तो मेरे खास काम नहीं आया, पर मॉ ने जो कुछ दिया वह मेरी पूँजी बन गयी।"

उसके पिता ने सोचा ऐसी कौन सी अनमोल वस्तु पत्नी से उसे दे दी, जो सुकृति की पूॅजी वन गयी। वह सशंकित हो उठा

जब पिता से नहीं रहा गया तब उन्होंने घर का सारा सामान और अपना एकाउन्ट देख डाला। पर सब कुछ ठीक था कहीं कोई परिवर्तन नजर नहीं आ रहा था।

क्रोधित होकर उन्होंने सुकृति से पूछा "जल्दी बता, तुझे तेरी माँ ने मुझसे छुपाकर क्या दे डाला" सुकृति मुस्कराकर बोली "अनमोल खजाना।"

उसने मॉ की सीख को ही कि हमेशा अपने बड़ों का सम्मान करना और पलटकर किसी को जवाव न देना, को पूॅजी मान लिया था, जिससे वह सबकी चहेती बन गयी।

●●●

इण्टरव्यू

विनोद बडी तैयारी के साथ इजीनियरिंग कॉलेज में प्रवक्ता पद का साक्षात्कार देने गया। वह बहुत ही होनहार था अपनी पढाई के बीच उसे कई स्वर्णपदक भी मिल चुके थे।

जब उसको साक्षात्कार के लिए बुलाया गया उसने बडे विश्वास के साथ सभी प्रश्नों का उत्तर दिया। संतोषजनक उत्तर देने पर भी वहाँ के प्राचार्य जी ने उससे कहा- ''यह तो ठीक है कि तुम यहाँ आए सभी प्रत्याशियो से योग्य हो, पर तुम्हारा परफारमेन्स ठीक नहीं है, हम लोग तुम्हें नियुक्त नही कर सकेंगे।'' यह सुनते ही विनोद के सारे अरमान चकनाचूर हो गए, वह विद्रोही हो उठा उसका जी चाहा कि वह इन डिग्रियों को वहीं फाडकर सदस्यो के समक्ष फेक दे।

अभी वह अपनी डिग्रिया समेट ही रहा था उसी समय उसी के साथ पढ़ा मंत्री जी का पुत्र, घनश्याम अन्दर आया।

फोन की घण्टी बजी, आवाज सुनते ही प्राचार्य जी ने कहा ''माननीय'' मैंने आदेशानुसार घनश्याम का नियुक्ति पत्र स्टेनों को पहले ही टाइप के के लिए दे दिया है।

घनश्याम गर्व से विनोद की ओर देख कर मुस्करा रहा था और विनोद की आँखो में पराजय के आँसू थे।

●●●

अदालत

सर्द हवाए शरीर की हड्डी तक को कपकपा रही थी। यह समय उनसे लिए बहुत कष्टप्रद था। पर वह दोनों मुख से उफ भी नहीं कर रहे थे, क्योंकि आज उम्र के सफेद गिलाफ घर की अदालत में टुकडे-टुकडे होकर बिखर गया था।

आज का निर्णय अद्भुत था, जो हकीकत बनकर सामने खडा था, जिसका सीधा सा अर्थ था पिता बड़े बेटे के पास और मॉ छुटके के पास जिदगी के शेष दिन बिताएगें।

उनके चेहरे पर उतार-चढाव की रेखाएं खिच रहीं थीं, वाह, कैसा सिला दिया उनकी अपनी औलादो ने, जीते जी बिछोह की इस घड़ी में उमड़े आँसू के वह पीने की कोशिश कर रहे थे। कुछ क्षण के लिए एक फीकी मुस्कान उनके होठो तक आयी, पर समय का तकाजा सोचकर दोनों अपनी अपनी दिशाओं की ओर बढ़ गए। ऐसा लगा कि कुछ समय के लिए सर्द हवा भी थम गयी, पुश्तैनी दौलत न सही खण्डहरों के बीच भी हिस्सेदारी होती है। इक्कीसवीं सदी के इस निर्णय को उन्हें स्वीकार करना ही पडा।

●●●

विदाई

हरिया आज नीम के नीचे लेटा हुआ अपने अतीत की ओर लौट गया। गरीबी होते हुए भी उसने अपनी बेटी मीरा को बड़े लाड-प्यार से पाला था। किसी तरह बी ए भी पास करा दिया था। उसे गुणवती बनाने में भी हरिया ने कोई कोर-कसर नहीं उठा रक्खी थी।

मीरा जब बड़ी हुई, हरिया को बस एक ही धुन थी कि किसी तरह वह मीरा की अच्छे घर में धूमधाम से शादी कर सके। वह बेटी का रिश्ता लेकर कई जगह गया, रोया गिडगिड़ाया, हजार मिन्नतें की, पर दहेज की मोटी रकम न दे पाने के कारण उसकी आरजू पूरी नहीं हो पा रही थी। उसके पास जमीन जायदाद भी उतनी नहीं थी, जिसे बेचकर वह मीरा के हाथ पीले करता।

निराश हरिया, प्यास से व्याकुल होकर जैसे ही घडे के पास पहुँचा, उसका दिमाग कल के समाचार पत्र पर गया, जिसमें लिखा था "ऑखे दान देने वाले को नगद बीस हजार रुपया दिया जायेगा।" पढ़ते ही वह तुरन्त अस्पताल पहुँच गया।

सध्या समय जब वह घर लौटा तो उसके ऑखों पर हरी पट्टी बधी थी पिता की यह दशा देखकर, मीरा की ऑखों से ऑसुओं की झड़ी लग गयी।

हरिया ने मीरा को समझाते हुए कहा "चुप रह बेटी, अब तेरे खुशी के दिन आने वाले हैं, देख तो, मैं ढेर सारे रुपये लाया हूँ।" इतने सारे रुपये देखकर मीरा भौचक्की रह गयी।

हरिया सोच रहा था अब वह जल्दी ही इन रुपयों से बेटी के लिए अच्छा सा दूल्हा ला सकेगा, खूब बिजलियो की सजावट होगी दावत में सभी रिश्तेदारों को बुलायेगा।

मीरा ने कहा मगर बापू, तुम क्या मेरा यह सुख देख सकोगे यह सुनते ही हरिया काप उठा। तुरन्त ही उसने अपने को सभालते हुए कहा- "पगली! बेटी की विदाई, देखने की नही महसूसने की होती है।"

●●●

मीनल

पार्टी पूरे शबाव पर थी। मीनल के डान्स से सभी की धडकने बढ़ गई थीं। मीनल बहुत खुश होकर डान्स कर रही थी, क्योंकि आज उसकी प्रिय सहेली नम्रता की सगाई थी।

इसी बीच अचानक हाल की बत्ती गुम हो गयी। चारों ओर अधेरा छा गया। जब बत्ती आई, तब तक मीनल वहां से उठ चुकी थी। चारों ओर चीख पुकार मच गई।

इस हादसे की रिपोर्ट तुरन्त नम्रता के पिता ने पुलिस में किया। पुलिस आई, चारों ओर से उसने हाल को घेर लिया। पुलिस कमिश्नर ने पूछा- "मीनल के साथ कौन डान्स कर रहा था।" जैसे ही उन्हे ज्ञात हुआ कि वह मंत्री जी का पुत्र अशोक था, सब सन्नाटे में आ गये। कमिश्नर ने कहा "बडे लोग हैं, मैं बिना तफ्तीस के किसी को भी गिरफ्तार नहीं करूंगा। थोडी देर बाद बस कुछ सामान्य हो गया। अगर असामान्य थे तो मीनल के माता-पिता जो बेटी की तलाश में भटक रहे थे।

एक हफ्ते बाद झाड़ी में लिपटी मीनल की लाश मिली। जाहिर था कि सब कुछ अशोक का ही कारनामा था पहुँच न होने के कारण मीनल के पिता शान्त हो गये। पर क्या उन्हे शान्ति मिल सकी। मीनल की आत्मा चीख-चीख कर पुकार रही थी, "पापा, हिम्मत करिए, नहीं तो न जाने कितनी बेटिया हवन हो जायेंगी।"

वह उत्तेजित होकर उठे। अशोक के घर गये। वहाँ काफी भीड लगी थी।

पता चला, अशोक की हत्या हो गयी। और वह हत्या मीनल की छोटी बहन सोनल ने की, जो उनकी ही बेटी थी। बीती रात एक होटल में सोलन ने अशोक को डान्स कने के बहाने से बुलाया वहीं अशोक की हत्या कर दी थी।

मामला कोर्ट में गया। सोनल ने निडर होकर कहा- "जज साहब, आपके

दरबार मे छोटे लोगों की सुनवाई नहीं है। पर इज्जत सबकी एक जैसी होती है। मेरी आत्मा ने जो फैसला किया, वह मैंने किया। मैंने तो एक हत्या करके कई हत्याए बचायीं। आपका न्याय मुझे सजाए मौत देगा, पर मेरी आत्मा ने मेरा कद ऊँचा कर दिया है।''

मंत्री जी सम्मुख ही बैठे थे। जज साहब फैसला सुनाने जा रहे थे। तभी उन्हे अपनी कुर्सी हिलती सी लगी। वह धीमे स्वर में बोले- ''मौका-ए-वारदात पर कोई गवाह नहीं था मुजरिम ने अपना जुर्म भी स्वीकार कर लिया है, अत सोनल को दस वर्ष की कठोर सजा सुनाई जाती है।''

●●●

भिखारी

"अबे साले, तू बिना पूछे गेट के अन्दर घुसा चला जा रहा है", अंधे भिखारी को देखकर दरबान चिल्लाया।

भिखारी गिड़गिड़ाते हुए बोला "दो दिन से पेट में दाना नहीं गया भूखा हूँ, कुछ दे दो।"

दरबान चिल्लाया "देखता नहीं है, अन्दर साहब लोगों की मीटिंग चल रही है, कोई ब्याह शादी नहीं कि तुझे जूठन लाकर दे दूँ।"

भिखरी बोला "तू ऑख वाला है तुझे नहीं दिखता कि मैं अधा हूँ। भला मैं क्या जानू अन्दर क्या हो रहा है।"

दरबबान गुस्से से बोला "तू भागता है यहाँ से या फिर कुत्ते को बुलाऊँ तुझे खदेडने के लिए।"

निराश भिखारी लौट आया। अन्दर विश्व विकलांग वर्ष के अन्तर्गत दी जाने वाली सुविधाओं के लिए बहस चल रही थी।

●●●

भूख

सुशीला के सारे फूल आज दोपहर तक ही बिक गये थे। उससे वह कुछ साग-सब्जी और आधा किलो आम खरीद कर घर ले आयी। घर में जवान छोटा बेटा था, जो नौकरी के लिए भटक रहा था।

माँ तो माँ होती है। उसने सोचा आज वह भरपेट भोजन बेटे को खिलाएगी कई दिन से बेटे को पूरा भोजन नहीं मिल सका है। वह रोटी बनाती गयी, पर उसे महसूस हुआ कि इतनी रोटी से उसके बेटे का पेट नहीं भरा है।

माँ ने युक्ति सोची। सब्जी में बेटे से छुपाकर थोड़ी सी मिर्च डाल दी। कड़ुआहट मिटाने के लिए बेटे ने खूब पानी पी लिया। पेट भर गया।

बेटे ने माँ की ओर निहारते हुए कहा- ''माँ, आज भूख के साथ प्यास भी खूब लगी थी, फिर तेरे हाथ का पानी भी तो मीठा होता है, मैं तृप्त हो गया हूँ।''

माँ अपने बेटे की ओर भरी आँख से निहार रही थी, दोनों माँ बेटे जानकर अनजान थे।

●●●

प्रेमिका

"सुनिए जी" पत्नी ने कहा

"कहिए भी" पति ने कहा

"आज घर में सब्जी कुछ भी नहीं है, मुन्ने को स्कूल की देरी हो रही है। महरी का भी आज पता नहीं, मालूम नहीं कहाँ मर रही है, बर्तनो के ढेर पड़े है।"

"उठो, जाओ न सब्जी लेने", पत्नी मनुहार करने लगी।

"नहीं मै इस समय ब्रह्मा भी कहे तो सुबह-सुबह कहीं नहीं जा सकता, शरीर में भी कुछ भारीपन लग रहा है, शायद ब्लड प्रेशर बढ़ गया है।"

पत्नी मन मसोसकर रह गयी, सोचा चलो आज सब्जी नहीं बनाऊँगी दाल-रोटी से की काम चल जायेगा, थोड़ी देर में फोन की घण्टी बजी पत्नी ने फोन उठाया। कोई स्नेहा जी पति जी को पूछ रही थीं, पति ने फोन उठाया, उधर से स्नेहा जी की आवाज सुनते ही, उनकी बाँछें खिल गयीं। तुरन्त उठकर तैयार होने लगे पत्नी से नहीं रहा गया, पूछ ही बैठी "अभी तो तुम्हारे सर में दर्द था, फिर तुरन्त कहां जा रहे हो", "औरतो की आदत बहुत खराब होती है। टोक दिया न बीच में स्नेहा ने बड़े प्यार से लंच पर बुलाया है क्या मना कर दू।"

"ओह, तो जाने का कार्यक्रम पहले से ही बना था, अगर तुम पहले ही बता देते तो मैं तुम्हारे हिस्से की दाल रोटी नहीं बनाती।"

"नहीं मैडम तुम तो बड़ी भोली हो और थोडी बेवकूफ भी"

"रोज-रोज एक ही तरह के खाने से मनोरंजन नहीं हो पाता है, मैं तो बस परिवर्तन के लिए जा रहा हूँ।" तभी बच्चो ने कहा "पापा, आज स्कूल बस नहीं आयेगी, मुझे स्कूटर से छोड़ दीजिए न?" पापा ने घूरकर उनकी ओर देखा, और अपना स्कूलटर स्टार्ट कर दिया। पत्नी भरे मन से पति को विदा कर रही थी, और स्नेहा नये-नये व्यंजन के साथ प्रतीक्षा में लीन थी।

•••

दूल्हा

गुनगुन और गिनी में दस वर्ष का अन्तर था। गिनी छोटी होने के कारण सबकी दुलारी थी। घर मे गुनगुन के विवाह की तैयारी हो रही थी। कहीं लड्डू मिठाई बन रहे थे, तो कहीं बिजली की झालरें टांगी जा रही थी। पर गिनी इन सबसे दूर गुनगुन की सलाह लेकर जूते छिपाने की योजना बना रही थी, और गुनगुन से कह रही थी "दीदी, दूल्हे से जो रुपये मिलेंगे, उसमे से आधा मैं तुम्हें भी दूगी।"

गुनगुन ने मुस्कराकर कहा "पगली सारे रुपये तो तेरे होंगे, दूल्हा मेरा होगा।" जैसे ही गिनी को पता चला कि दूल्हा केवल गुनगुन का होगा। वह रूठ गई। उसका मन स्वीकार नहीं कर रहा था, कि दूल्हा केवल दीदी का होगा।

कुछ सोचकर थोडी देर बाद गिनी कमरे से बाहर निकली और गुनगुन को घसीटते हुए नदी के किनारे ले गयी और कहने लगी "यदि तुम मुझे दूल्हा नहीं दोगी तो मैं तुम्हें नदी में ढकेल दूंगी।" गुनगुन सकते में आ गई कि कैसे इस नन्हीं बहन को समझाए कि दूल्हा नहीं बट सकता। गुनगुन को सोच में देखकर गिनी ने सहज रूप से कहा- "दीदी, तुम दूल्हे से शादी कर लेना मुझे थोड़ी देर के लिए खेलने के लिए दे देना", क्योंकि गिनी की नजर में दूल्हा मात्र एक खिलौना था।

भोली गिनी बडी हुयी, उसकी भी शादी का दिन आया। खुश थी कि उसे भी दीदी की तरह दूल्हा मिलेगा, जिसपर उसका पूरा हक होगा। पर भाग्य की डिम्बना, उसके दूल्हे ने उसे खिलौना बना कर रख दिया।

घर मे सेविका और बाहर शो पीस बन कर रह गयी। उसके माध्यम से पति महोदय अधीक्षक से ज्वाइन्ट सेक्रेटरी बन गए जहॉ उन्हें उस जैसी कई लडकिया बहलाने को मिली।

जब कभी गिनी ने विरोध किसा, तब उसके पति ने कहा "पढ लिख कर तू मूर्ख न बन मैंने तेरी माँग तो समाज में दिखाने के लिए भरी थी, पूरा दूल्हा तो मैं किसी का भी नहीं।" और एक दिन समाचार पत्रों मे गिनी की फोटो छपी थी, जिसमें हाथ में मिट्टी का अधूरा दूल्हा लिए उसकी लाश नदी में तैर रही थी।

●●●

कसक

हवा मे कम्पन था और यह समय अजू को तकलीफदेह लगने लगा। वह तिलमिला उठी, पर अपनी बेटी सुरभि के सामने वह उफ तक नहीं कर सकती। पति को मरे साल भी नहीं बीता था, फिर घर मे बेटी के रहते वह अन्य किसी पुरुष को भागीदार भी तो नहीं बना सकती थी।

बेटी सुरभि को अजू ने हॉस्टल भेज दिया। अंजू के लिए सारे रास्ते खुल गये। कॉफी पीकर जब निकेत जाने लगा अंजू ने कहा, "निकेत अब तुम कहीं नहीं जाओगे, मैंने बीच के कांटे को हॉस्टल भेज दिया।"

निकेत ने कहा "अंजू, तुम बडी भोली हो भला तुम्हारा हमारा क्या जोड़, मैंने तो सुरभि के लिए ही तुमसे नाता जोड़ा था, जब खुशबू नहीं तो सूखी डाल मै कहाँ सजाऊँगा", यह कह कर निकेत चला गया।

अंजू कसमसाकर रह गयी। सामने रक्खा आइना अंजू को उम्र के सफेद होते बाल का एहसास करा रहा था कि इस मोड़ पर उसे अकेले ही सफर करना होगा।

●●●

नीड़

तेज हवा शरीर को कंपकंपा दे रही थी, पुष्पा को यह हवा मारे डाल रही थी। घर भरा होने पर भी इस समय उसके पास बैठने का किसी के पास समय नहीं था। वह कमाती थी, अगर चाहती तो घर मे राज करती, पर नहीं, उसने इस घर के लिए क्या कुछ नहीं किया। उसके लिए अपने मन और विचार की कोई अस्मिता नहीं थी।

आज जब वह पैर खराब होने के कारण चल नहीं पा रही थी, सभी उससे कटने लगे है, जैसे वह इस घर का हिस्सा नहीं एक टुकड़ा है। उसका स्वाभिमान जागा, नहीं वह टुकड़ा बन कर नहीं जिएगी।

उसने बेटी को आवाज लगायी "बेटी जरा गरम पानी की बोतल दे जा, पैर बहुत दुख रहा है।" "गैस खत्म होने वाली है माँ, पानी गरम नहीं हो सकता है", "ठीक है भइया से कह दे गरम शाल ही उढ़ा दे।" अर्पित ने कहा "क्या माँ तुम रात में भी चैन की साँस नहीं लेने देतीं।"

पुष्पा मन मार कर पलंग पर सिकुड़ी पड़ी रही, तभी बगल के कमरे से शेखर उसका पति फोन पर किसी से कह रहा था "तुम घर ही आ जाया करो, पुष्पा तो कमरे तक ही सिमट कर रह गयी है।" पुष्पा पख कटे पक्षी की तरह तिनकों से स्वय द्वारा बनाये गए नीड को उजड़ते देख रही थी।

●●●

औरत

सरिता के बच्चे ने आज ही धरती पर जन्म लिया, था, और बच्चे का पिता एक लाख का कर्ज समय पर अदा न कर पाने के कारण भटक रहा था। क्योंकि आज यदि वह कर्ज नहीं भर सकेगा तो वह हमेशा के लिए अपने बॉस की नजरों में गिर जायेगा। इधर उसका मित्र जिसके लिए उसने कर्ज लिया था, जिन्दगी और मौत से जूझ रहा था, उससे रकम वापसी की बात करना नीचता थी।

तभी अस्पताल के बगल वाले कमरे में करोड़पति अविनाश नर्स से कह रहा था कि यदि कोई आज का जन्मा अपना बच्चा मेरी पत्नी को दे दे तो मैं उसे मालामाल कर दूंगा। सरिता ने सुना, और अपने जिगर के टुकड़े को पति के सम्मान की रक्षा के लिए डूबते मन से अविनाश को सौंप दिया।

थोड़ी देर में सरिता का पति सुरेश भागता हुआ आया और सरिता से बोला– "मैं आज अस्पताल का बिल नहीं भर सकूगा, तुम्हे दो चार दिन बाद घर ले जा सकूगा।" सरिता ने रुपये सुरेश के हाथ में रख दिए। इतने रुपये एक साथ देख कर सुरेश अवाक रह गया।

बिना सरिता की बात सुने ही उसने सरिता के गाल पर एक थप्पड़ जड दिया, "तुझे तो मैं अपना सर्वस्व मानता था, पर तुझमें यह गुण भी है मैं नहीं जानता था, अब मेरे घर के सारे रास्ते आज से तुम्हारे लिए बद हो गये।

सरिता बिलखती रही, पर सुरेश चला गया। राम ने तो अपनी सीता को एक अवसर भी दिया पर सुरेश ने सरिता को दिशाहीन भटकने के लिए छोड़ दिया।

•••

पिंजरा

मौली ने इंजीनियरिंग में टॉप किया था, घरवालो की खुशी का ठिकाना नहीं था, पत्रकार उसे घेरे हुए थे, और उसकी भावी योजनाओं के विषय मे पूछ रहे थे। वह भी गद्गद होकर उत्तर दे रही थी कि वह आर्किटेक्ट बनेगी।

मौली के पिता श्रीश जी ने सोचा वह पहले बेटी की शादी करेंगे, फिर नौकरी।

पिता की इच्छा के कारण मौली को झुकना पडा। उसका रिश्ता एक भरे पूरे परिवार में हो गया। उसका पति भी किसी ऊँचे पद पर था। मौली ने अपने काम और व्यवहार से सबका दिल जीत लिया था।

एक दिन सहमते हुए मौली ने सास से कहा "अगर आप इजाजत दें तो मैं भी नौकरी कर लू।"

सास ने उत्तर दिया "अगर तुम नौकरी करोगी तो घर का काम काज क्या मैं करूँगी" उत्तर सुनते ही मौली ने चाय की प्याली उठायी और चुपचाप किचन की ओर चल दी, जो उसका अपना पिंजरा था। बाहर ऑगन में उसका देवर विश्वविद्यालय जाने के लिए किताबें लिए खड़ा था, जिसे वह ललचाई दृष्टि से देख तो सकती है पर वह पढ नहीं सकती थी, क्योंकि उसका दायरा पिंजरे तक ही सीमित था।

●●●

परिणति

सारांश बडी मेहनत और लगन के बाद मेडिकल में आया था। पिता का एक मात्र पुत्र था। दिल्ली जाते समय माँ-बाप ट्रेन छूटने के समय तक उसे समझाते बुझाते रहे कि "बेटा दिल्ली बहुत विशाल नगरी है, वहाँ दगा फसाद आए दिन होते रहते हैं, तुम इन सबसे दूर रहना अपने खाने-पीने पर ध्यान रखना, पहुँचते ही टेलीग्राम कर देना।" यह कहते-कहते दोनों के आँख से आँसू ढुलक आये थे।

हॉस्टल पहुँचते ही साराश ने सबसे पहला काम टेलीग्राम करने का किया। वह बिना आलस किये तुरन्त पोस्ट आफिस के लिए निकला।

कमरे से बाहर निकलते ही उसे वहीं सीनियर छात्रों ने रोक लिया और जबरदस्ती उसे किसी पार्क में ले गए और कहा कि "इस आम के पेड पर चढकर जो आम सबसे ऊँची डाली पर लगा है उसे तोड़कर लाओ" साराश पेड़ पर कभी चढ़ा ही नहीं था, जैसे ही थोडा ऊपर चढ़ा पेड़ की डाली टूट गयी और वह जमीनपर गिर गया।

वहीं पर कुछ छात्र क्रिकेट खेल रहे थे जिनकी गेंद साराश के माथे पर लगी, खून की धारा नाक से बहने लगी। उसके पॉकेट से भरा हुआ फार्म झांक रहा था जिस पर लिखा था सकुशल पहुँच गया-साराश।

किन्तु माँ के पास कुशलता का समाचार तो नहीं पहुँच सका मेडिकल छात्रों के एक लम्बे हुजूम के साथ सारांश अवश्य कंधे पर पहुँच गया।

●●●

साहब

साहब की बेटी की शादी तय हो गयी। जल्दी-जल्दी टेण्डर की कार्यवाही पूरी की जा रही थी। सहायक ने कहा कम से कम एक हफ्ते का समय तो इतने बड़े टेण्डर के लिए देना ही पड़ेगा। "बेवकूफ" हो क्या ? दफ्तर साहब के अनुसार चलेगा या तुम्हारे आदेश पर फिर अकड़ते क्यों हो तुम्हारा हिस्सा भी तो मिलेगा ही।

बड़े बाबू की बेटी की शादी भी तो जल्दी होनी है। ठीक है ठीक है उसे कोई कोठी कार तो देना नहीं है, उधारी पर भी शादी हो सकती है।

साहब की बेटी की बारात आयी। खूब जश्न मना। बेटी विदा की शुभ घड़ी भी आ गयी, पर पूरा वातावरण स्तब्ध था, साहब के घर रेड पड़ा था। उस समय सबकी निगाहें साहब को बेंध रही थीं। वह सिर झुकाए खड़े थे।

जबकि बड़े बाबू के द्वार पर शहनाइयां बज रही थीं, बडे बाबू गर्व से बेटी की बारात विदा कर रहे थे।

●●●

मुखौटा

रीमा जीवन के शीर्ष तक पहुँचने के लिए हर हथकण्डा अपना रही थी फिर भी उसे वांछित सफलता नहीं मिल पा रही थी।

निराश होकर उसने रमेश से दुखड़ा रोया, तब रमेश ने समझाते हुए कहा "रीमा चेहरा फिर भी चेहरा होता है, बिना बोले भी बहुत कुछ कह देता है, पर मुखौटा निर्जीव होता है, उसे आसानी से बदला जा सकता है, जो आज के समय का युग धर्म है। सफलता की कुंजी है। तुम कोशिश करके तो देखो।"

रीमा अब प्रगति की दौड़ में रमेश से भी कहीं आगे थी, क्योंकि उसने अब रमेश का मुखौटा भी खरीद लिया था।

●●●

समय

निशा सरपट सीढ़िया लांघती जा रही थी, उसने एक बार भी मुडकर नहीं देखा कि अनु सीढ़िया चढ भी पा रही है या नहीं। अनु सीढ़ियां चढती निशा को बेबस नजरों से निहारती रही।

अनु सोचती इसमें दोष किसका है? नियति का, समय का या फिर भावना का।

अनु सोचती कभी वह भी तो ऐसी ही थी, पलटकर देखना उसकी शान के खिलाफ था फिर आत्मग्लानि किस बात की।

अन्तर्मन से आवाज आयी समय बड़ा बलवान होता है। तू जब गाडी से उतरी थी तब तूने भीख मागती बुढिया को यह कहकर डांट दिया था कि न जाने कहॉ-कहॉ से आ जाती हैं भीख मांगने। तूने पहचाना तक नहीं कि वह वही बुढ़िया है जो कभी बचपन मे तुझे स्कूल लाया ले जाया करती थी।

अनु ने सोचा शायद यही नियति है। और वह सीढ़ी पकडकर चढ़ने लगी।

•••

तलाश जारी है

आज मंत्री जी दफ्तर में पधारने वाले थे। वहाँ का प्रत्येक कर्मचारी सहमा हुआ था कि पता नहीं किस पर मंत्री जी की भृकुटी तने और उस पर गाज गिर पड़े। इस समय अगर कोई भयभीत नहीं था तो सीमा जी। उन्होंने मंत्री जी के स्वागत के लिए माले भी मंगा रखी थी।

अपने पूरे दलबल के साथ मंत्री जी पधारे। उनको देखकर सीमा जी गर्वित हो रहीं थी। उन्हीं के आमन्त्रण पर मंत्री जी दफ्तर का निरीक्षण करने आये थे। वह सबके सामने बार-बार कहते भी जा रहे थे, आप सभी को सीमा जी से सीख लेनी चाहिए, वह पूरी व्यस्तता के बाद भी मेरा सहयोग करती हैं।

मन ही मन गरियाते हुए कर्मचारीगण मंत्री जी के हॉ मे हॉ मिला रहे थे। उसी समय मानसी जो सुदर्शना थी, समने से आती दिखायी दी। मधुर मुस्कान के साथ उसने मंत्री जी को नमस्कार किया। मंत्री जी का दौरा पूरा हो गया। सीमा जी ने तुरन्त कहा यदि आप कहें तो कल मैं मानसी को लेकर आपके पास आऊँ।

मानसी की घनिष्ठता मंत्री जी से बढती गयी। अब वह मंत्री जी के दरबार की खासमखास थी। सीमा जी का प्रमोशन हो गया, और वह पुनः एक मानसी की तलाश में व्यस्त हो गयीं।

●●●

हाथी के दाँत

हरि बाबू इस बार चुनाव भारी बहुमत से जीते थे। उनका ड्राइंगरूम जनता एवं पत्रकारों से भरा हुआ था। पत्रकार लोग तरह-तरह के प्रश्नों की झड़ी लगाये हुए थे।

किसी व्यक्ति ने पूछा- "नेता जी, आपकी भारी जीत के पीछे आपके क्या सिद्धांत हैं।" नेताजी ने जवाब दिया- मैंने आरक्षित कोटावाले का पूरा ध्यान रखने की घोषणा खुले मंच पर की है।

फिर एक पत्रकार ने तुरन्त पूछा- "क्या आप अपने बेटे-बेटी का विवाह किसी आरक्षित कोटा वाले से करेंगे।"

बिगडकर नेता जी बोले- "कदापि नहीं।"

प्रश्न पूछते हुए एक दूसरे व्यक्ति ने कहा-"आखिर क्यों?"

नेता जी ने जवाब दिया - "तुम लोग क्यों मूर्खो जैसी बात करते हो, शादी ब्याह क्या गुड्डे गुड़ियों का खेल है, जिससे चाहा कर दिया, इसके लिए कुल-खानदान, जन्मपत्री सब कुछ देखना पडता है। क्या मैं सिद्धान्तों के आगे अपने संस्कार छोड दू। यह सब सिद्धान्तो की बातें केवल भाषण के लिए होती हैं। अमल करने के लिए नहीं।"

कुछ रूककर उनका घिसा-पिटा भाषण शुरू हो गया- "पिछडी जाति को आगे लाने का प्रश्न एक राष्ट्रीय प्रश्न है इसका निराकरण कोई एक नेता नहीं कर सकता। आप सभी युवा वर्ग के हैं, आपको इसके लिए आगे बढना होगा," इतना कहने के बाद नेता जी खीसें निपोर कर हंसने लगे। उनकी हसी मे शामिल होने के लिए जनता भी बेबसी की हसी हंस रही थी।

●●●

वैभव

नूपुर उद्योगपति उमेश बसल की इकलौती लाडली बेटी थी। घर-गृहस्थी उसके लिए कोई माने नहीं रखती थी। कॉलेज में वह खेल-कूद, नाच-गाना सभी में अग्रणी थी।

पिता उमेश ने एक सम्पन्न परिवार में मोटी दहेज की रकम के साथ नूपुर का विवाह विवेक से कर दिया। नूपुर की अपनी दुनियाँ थी, पति के प्रति क्या कर्तव्य होता है इससे उसे कोई सरोकार नहीं था। विवेक का सारा काम पहले की ही तरह नौकर नौकरानी ही करते थे।

एक दिन होटल की पार्टी में नूपुर ने देखा कि विवेक अपनी मैनेजर प्रीति के साथ डान्स कर रहा है, और उसने पास ही बैठी नूपुर की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। नूपुर विवेक को गुस्से से भरकर खींचते हुए बाहर लायी और बोली-''तुमने तो बेशर्मी की हद कर दी है जरा भी नहीं सोचा कि तुम्हारी पत्नी भी है'' विवेक बोला-''मैडम, आप ही ने तो ससुराल मे प्रवेश करते ही कहा था कि मैं तुम्हारी पत्नी अवश्य हूँ, पर मेरे तुम्हारे रास्ते हमेशा अलग रहेंगे, फिर मैंने क्या गुनाह किया, तुम्हारे कहे अनुसार ही तो चल रहा हूँ।'' तब तक प्रीति भी बाहर आ गयी थी। दोनों को झगड़ते देखकर मुस्करा रही थी, जिसे देखकर नूपुर का गुस्सा और तेज़ हो गया।

बात बिगडते देख प्रीति बोली- ''मैडम, आपको पत्नी का अर्थ समझाने के लिये ही तो साहब ने और मैंने यह नाटक रचा था, भला आपकी जगह मैं कैसे ले सकती हूँ।''

नूपुर मुडकर अपनी गाडी की ओर जाने लगी, दूसरी ओर विवेक गाडी का गेट खोले नूपुर की प्रतीक्षा कर रहा था, दोनों की पलके भीगी थीं, नूपुर दौड़कर विवेक की गाडी में आ बैठी, कि कहीं फिर उसका पति भटक न जाय। भावना के आगे वैभव की दीवार उसे ढहती नजर आयी।

●●●

अर्धांग

तृप्ति जिसे चाहती थी, उससे उसका विवाह नहीं हो सका। विवाह की रात उसके पति ने उससे कहा- "मैं तुम्हें पूरा प्यार नहीं दे सकूंगा, क्योंकि मैं पहले ही अपना प्यार अंकिता को दे चुका हूँ।"

पति की यह बात सुनकर तृप्ति को भी अपना प्यार, जो उसने अमर से किया था, याद आया। उसके दिमाग में अमर के शब्द गूँजने लगे "तृप्ति" तुम्हारे बिना मैं अधूरा हूँ।

कुछ सोचकर तृप्ति ने अपने पति से कहा। चलेगा, हम और तुम आज के युग के हैं, आधे-आधे, प्यार से ही पूरे हो लेंगे। शायद आज के अर्धांग की परिभाषा भी तो यही है।

●●●

बड़े लोग

राकेश मोहन का अजीज मित्र था। दोनों ने एक ही हॉस्टल में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। मोहन इंजीनियरिंग पास करके दिल्ली में नौकरी करने लगा था।

एक दिन अचानक मोहन का तार आया कि उसे हार्ट अटैक हो गया है। राकेश अपने को रोक नहीं पाया, तुरन्त दिल्ली के लिए रवाना हुआ। वहाँ पहुँचकर साकेत के लिए टैक्सी किया, जल्दी में वह मकान नम्बर भूल गया। वहाँ पहुँकर वह जिस किसी से भी मोहन का घर पूछता, सब झल्लाकर कहते, यह बड़े लोगों की कॉलोनी है, यहाँ किसे फुर्सत है कि, एक दूसरे के विषय में जाने, भाई हम तो तभी एक दूसरे के घर जाते हैं जब हमारा कोई काम होता है, या फिर पार्टी आदि।

हारकर राकेश दुखी मन से सामने वाले पार्क में बैठ गया और सोचने लगा किस काम के यह बड़े लोग हैं, जिनमें भावना नाम की चीज नहीं है, इससे अच्छी तो मेरी सकरी गलियाँ ही है, जहाँ आज भी मेहमान को पता ही नहीं बताते, बल्कि घर तक छोडकर भी आते हैं, पर यह आज पता चला कि यह तो छोटे लोगों की पहचान है।

●●●

घोंसला

सध्या होते ही चिडियों की चहचहाट बढ़ती जा रही थी, सभी अपने घोसले की ओर बढ़ रही थी।

मधु चिड़ियों के कलरव को देखकर सोच रही थी, काश उसका भी अपना घोंसला होता।

तभी उसे सामने मुडेर पर बैठा पक्षी दिखा, जो बार-बार पख फैलाकर खुशी जाहिर कर रहा था।

मधु ने उसकी खुशी का राज जानना चाहा।

पक्षी का उत्तर था "तू मेरे साथ चल, हम लोग खुले आसमान के नीचे अपना बसेरा बनाएगें जहॉ कम से कम घोसले की चाहत मे, टूटने की कसक तो न होगी"

उसी समय मधु ने देखा सामने वाले पेड का पुराना घोंसला अचानक बिखरकर गिर पड़ा।

क्योंकि उसमें पल रहे छोटे पक्षी बडे हो गये थे सभी एक दूसरे को चोंच मारकर घोंसले पर अपना अधिकार जमाना चाहते थे।

●●●

ताला

शुभी सोचती आखिर दादी इस बडे से सन्दूक में क्या रखती हैं, जिसका बड़ा सा ताला कभी खुलता नहीं घर के छोटे बडे सभी की दृष्टि उस ताले पर लगी थी।

ताले के चक्कर मे दादी की खूब खातिर होती। कोई हाथ पैर दबाता तो कोई दूध मलाई खिलाता। दादी को इतना सुख तो तब भी नहीं मिला था जब दादा जी जीवित थे। सन्दूक था कि किसी एक के हिलाए हिलता न था।

एक दिन दादी अचानक गायब हो गयी। जब दो दिन तक नहीं लौटी तब घर मे लोगों ने सोचा कि मौका अच्छा है। सबने मिलकर सन्दूक को चारपाई के नीचे से खिसकाया और ताला तोड़ डाला।

सन्दूक खुलते ही सोंधी मिट्टी की महक कमरे में फैल गयी। हॉ एक छोटा सा पत्र लिफाफे में लिपटा अवश्य मिला जिसमें लिखा था "बेटा मैंने अपना सर्वस्व तुम लोगो के पालन-पोषण और पढाई लिखाई में न्योछावर कर दिया, शहर मे लोग मॉ-बाप को भी पैसे के आधार पर पहचानते हैं, इसलिए जीने के लिए अपने ही बेटों से धोखा करना पड़ा, पर आत्मा ने आवाज दी, धोखे की जिन्दगी अधिक नहीं चल सकती, मुझे गांव की सोंधी मिट्टी ने पुकारा, हम जैसे हैं हर हाल में तुम्हारे हैं, मैं पुनः एक बार अपने गॉव की डगर चल पडी।"

पत्र पढकर कोई दादी को बुलाने नहीं गया, बल्कि सबने चैन की सॉस ली कि चलो अच्छा हुआ कम से कम क्रिया क्रम का पैसा तो बचा।

●●●

दाग

घनश्याम दास की कपड़े की दुकान पर सहालत होने के कारण काफी भीड़ थी। दूल्हे के लिए सभी सफेद शेरवानी का कपड़ा ढूढ रहे थे। पर हर कपड़े में कहीं न कहीं दाग था।

लोगों ने कहा ऐसा कपड़ा दिखाओं जिसमें दाग न हो। दुकानदार कहता- "साहब - कपड़ा मिल से बेदाग ही आता है आप ही लोगों के हाथ लगने से दाग-दार हो जाता है।"

यह तो बहस करता है। चलो दूसरे दुकान में देखते है शायद अपने मन का कपडा मिल ही जाय पर हाय री किस्मत कहीं भी तो ऐसा सफेद कपडा नहीं मिला जिसमें कहीं दाग-धब्बे न हों।

अन्तरात्मा की आवाज आयी तुम भी अपने अन्तर में झाँक कर देखो जहाँ शायद दाग ही दाग दिखायी देंगे, फिर दाग-दार कपड़े से क्या परहेज। वक्त का तकाजा मानकर अब तो समाज ने भी दाग-दार कपड़े की तरह ही दुल्हे को भी स्वीकार कर लिया।

●●●

मास्टर दशरथ

मास्टर दशरथ के राजा दशरथ के ही तरह चार पुत्र थे। मास्टर दशरथ ने पुत्रों में एकता बनी रहे इसलिए सभी के नाम रामायण के आधार पर ही रखे। किन्तु मास्टर साहब को पुत्रों को यह सभी नाम आउट आफ डेटेड लगे। उन्होंने स्वयं अपने नाम बदल लिए।

मास्टर साहब ने समय के साथ सबका विवाह भी कर दिया। परिवार वृद्धि भी होने लगी। युगधर्म के अनुसार वैचारिक मतभेद पनपने लगे। नित्य ही किसी न किसी बात को लेकर घर में महाभारत होने लगा।

हारकर मास्टर साहब ने बड़े बेटे बंटी से कहा कि राम तो घर में शान्ति लाने के लिए चौदह वर्ष बनवास करने चले गए थे, तुम साल दो साल के लिए ही छोटे भाई शंटी के साथ अलग घर लेकर चले जाओ। पर पिता का घर छोटे भाइयो को कहीं न मिल जाये, इसलिए कोई घर छोड़ने को तैयार न था।

हारकर मास्टर दशरथ को ही स्वयं द्वारा बनाए गए बसेरे से दूर जाना पड़ा। और वह भी नितान्त अकेले क्योकि मास्टरनी ने भी बेटे का ही साथ दिया।

●●●

चयन

जीवन भर चयन प्रक्रिया से उमा ऊब गयी थी। एडमीशन से लेकर नौकरी पाने तक चयन प्रतियोगिता का सामना करना पडता, यही नहीं विवाह योग्य होने पर न जाने कितने लड़के वालों के समक्ष चयन के लिए सज सँवरकर खड़ा होना पड़ता। इस चयन युग में सघर्ष करते-करते वह थक चुकी थी।

निराशमन से वह एक दिन सैर सपाटे के लिए निकली तभी उसकी दृष्टि सामने लगे बोर्ड पर गयी जिसमें लिखा था, चयन पाठशाला। अन्दर जाकर देखा तो उसमे वहीं शिक्षक थे जिन्होंने कुर्सी पाने के लिए न जाने कितने दॉव पेंच खेले थे। उसने वहॉ तुरन्त दाखिला ले लिया अब वह स्वय वहॉ से गुरू होकर निकली।

अबकी बार वह पूरे मन से इण्टरव्यू देने गयी, कक्ष मे उसका साक्षात्कार हो रहा था और विशेषज्ञों की बीवियॉ उमा की सहेली के साथ शापिग कर रही थीं। वह चुन ली गयी। यह चयन का पहला मंत्र था।

कार्यालय में पदभार ग्रहण करने जब उमा गयी तब पता चला उसका प्रतिद्वन्दी कोर्ट से स्टे आर्डर ले आया है। वह तनिक भी धबरायी नहीं, चयन का दूसरा फार्मूला अपनाया। जज साहब के बच्चों के दावत पार्टी तो होनी ही चाहिये। स्टे खारिज हो गया।

अब इसे अपनी विवाह की चिन्ता हुयी उसने बडा सा विज्ञापन निकाला निश्चित तिथि पर दूल्हे के हकदार उसके पद और पैसे को देखकर हाजिर हुये। अबकी चयन उमा को करना था। सभी ने उसे सच्चाई से दूर हटकर सब्जबाग दिखाये। उमा चयन में माहिर हो चुकी थी। जब अन्तिम प्रत्याशी आया उसने स्पष्ट रूप से कहा अब आप बड़ी अधिकारी हैं, आपको हर मोड पर मेरी आवश्यकता होगी क्योकि मैं नेता हूँ। आपके द्वारा किये गये सभी गलत सही निर्णयों पर मैं ही पर्दा डाल सकता हूॅ। यही नहीं आप से मेरे भी सौ काम निकलेंगे। उसकी साफगोई पसंद आयी। उसने तुरन्त कार्ट छपने के आदेश दिये अब वह स्वय पाठशाला की मालकिन भी थी।

•••

राधा

अनूप नित्य ब्रजनन्दन के दर्शन करने जाता, और घण्टों बैठा रहता। एक दिन उसने देखा कि एक किशोरी सीढियों के पास बैठी ढेर सी माला गूँथ रही थी, सुन्दर-सुन्दर फूलों वाले माले देखकर वह भी आकर्षित हुआ। अब किशोरी राधा से माला खरीदना अनूप का नित्य कर्म बन गया था। इस क्रम में कब दोनों एक दूसरे के करीब आ गये पता ही न चला। धीरे-धीरे मन्दिर में आने वाले सभी उन्हे पहचानने लगे।

एक दिन अचानक अनूप के घर दिल्ली से तार आया कि उसके पिता अस्वस्थ हैं वह तुरन्त आ जाये। अनूप को बेमन से जाना ही पडा। राधा ने भी साथ चलने की जिद की, पर अनूप ने उसे आश्वासन दिया कि तुम नित्य मेरे लिए नए माले गूँथकर रखना, इसके सहारे प्रतीक्षा की घड़िया बीत जायेगी, और मैं तुम्हे ब्याहकर ले जाऊँगा। राधा ने मालाओ की ढेर लगा दी।

कई वर्षो बाद अनूप पुन ब्रजनन्दन के दर्शन करने पत्नी रूक्मिणी के साथ आया। इतने वर्षो मे भी उसे मन्दिर का वह स्थान याद था जहाँ राधा बैठकर माला गूँथा करती थी। जब उसी स्थान पर उसने एक अधेड़ उम्र की महिला को देखा जो उसी तरह माला गूँथ रही थी, उसने माला खरीदने के लिए रूपया बढाया,। राधा ने उसकी ओर देखे बिना ही कहा "बाबू मैं अब माले नहीं बेचती, यह माले तो मेरे इष्टदेव के लिए हैं, जिन्होंने मुझे छला है। मैं उन्हें देने जा रही हूँ।" पर तुम्हारे इष्टदेव है कहाँ" तुम्हे सुनायी नहीं देता, घण्टी बजाकर मुझे बुला रहे हैं, मैं जब तक जाऊँगी नहीं, वह एक ही जगह खडे होकर मेंरी प्रतीक्षा करते रहेंगे। रास्ता छोड़ों, डरती हूँ कहीं पहले की तरह उसे भी मुझसे छलकर कोई छीन न लें जाय।

राधा वेग से माला लेकर सीढ़ियों पर चढ़ने लगी। कदम लड़खडा गए, माला के फूल बिखर कर अनूप के चरणों के पास अर्पित होकर राधा की करूण कहानी कह रहे थे। राधा बेहोश हो गयी थी उसका मुस्कराता चेहरा ब्रजनन्दन में एकाकार हो गया था। अनूप राधा की करूण कहानी पर दो आँसू भी न बहा सका क्योंकि सामने रुक्मिणी बडी सी कार मे बैठी मुस्करा रही थी। पैसे ने प्यार का सौदा कर लिया था।

●●●

विरासत की सोच

मास्टर सीताराम अब बूढ़े हो चले थे। बेटो के सहारे टूटी खटिया पर लेटे-लेटे जिन्दगी के दिन गिन रहे थे। बचा खुचा जो भी मिलता नियति मानकर उसे स्वीकार कर लेते, सम्पत्ति के नाम पर उनके पास जो कुछ था, वह उनकी किताबें, जिसे उन्होंने अपने संजोए धन से प्रकाशित कराया था।

एक दिन घर मे उनके दोनों बेटों रमेश, सुरेश एव बहुओं पोतों की कमेटी बैठी। निर्णय हुआ कि पिता जी की किताबों ने बेकार में एक कमरा घेर रखा है, उसे कबाड़ में बेच दिया जाय। सड़ जाने पर तो रद्दी के भाव भी नहीं बिकेंगी।

कबाडी वाले से सारी किताबें उनके शिष्य ने खरीद लीं और उन्हे पुरस्कार हेतु जमा कर दिया। उन्हे "साहित्य श्री" सम्मान के साथ दो लाख रूपये भी मिले पर यह सुख मास्टर सीताराम भोग नही सके। उस रकम का भोग बेटों ने ही किया।

मास्टर साहब के बेटे भी कुछ वर्षों बाद बूढ़े हो चले। उनकी जिन्दगी भी बेटों के भरोसे से चलने लगी। रमेश दमें का मरीज था, एक दिन उसकी खांसी बहुत बढ गयी, उसने बेटे अशू से दवा लाने को कहा अंशू बोला पापा, मैं आपकी इतनी महँगी दवा कहा से लाऊँ, आप तो बाबा की तरह साहित्यकार भी नहीं है, जिनकी किताबों से ही कुछ रकम मिल सके।

रमेश ने डॉटा तुझे अपने पिता के लिए ऐसे शब्द कहते शर्म नहीं आती "काहे की शर्म, यह सोच भी तो विरासत में आपसे ही मिली है।" सच्ची विरासत की सोच के आगे रमेश निरूत्तर था।

●●●

देवता

रूप विदा हो रही थी चलते चलते उसकी मा उसे समझाती जा रही थी बेटी ससुराल मे पर्दे से रहना, सास ससुर का सर ढक कर चरण स्पर्श करना, रूपा को यह स्वीकार्य नहीं लगा'' बोली जैसी तुम मेरी मॉ हो, वैसी ही अशोक की मॉ, फिर उनके आगे पर्दा कैसा।

अरे बेटी, जिनको मान-सम्मान दिया जाता है, उनके आगे झुकना पड़ता है, और सम्मान देने के लिए पर्दा भी करना पड़ता है "ठीक है तुम्हारी खुशी के लिए मै वैसा ही करूॅगी।"

चार दिन बाद वह अशोक के साथ मायके आई, अशोक ने रूपा के मॉ बाप के पैर तक नहीं छुए। रूपा को बुरा लगा, उसने अपनी माँ से कहा कि अब वह भी अशोक की मॉ के चरण स्पर्श नहीं करेगी।

मॉ ने रूपा को समझाते हुए कहा पगली तू नहीं जानती कि दामाद देवता जैसा होता है। देवता के आगे भक्त ही झुकते हैं देवता नहीं।

नहीं मॉ, भक्तों ने भी राम को तभी अपनाया जब उन्होंने अपना देवता का चोला, बदल दिया था।

अशोक पास खडा सब सुन रहा था, आज रूपा ने उसे कितनी बडी सीख दी थी।

●●●

दृष्टिबोध

पुर्णिमा वाले दिन अचानक साम्प्रदायिक ताकतों ने दंगा फैला दिया। युवक एक दूसरे सम्प्रदाय के धार्मिक ग्रन्थों को बटोर कर होलिका जलाने की तैयारी करने लगे। तभी उनकी दृष्टि धार्मिक ग्रन्थों के बिखरे पन्नों पर पडी जिसका भाव था "ईश्वर अल्ला के दिखाए रास्ते एक ही हैं, सभी जीवों के खून का रंग लाल है, धर्म के ठेकेदार जिस आँच पर रोटी सेंक रहे हैं, वह तुम्हारे भविष्य को अधकार से भर देगा।"

यह पढ़ते ही सभी की ज्वाला शान्त हो गयी, धर्म के ठेकेदार असफल होकर दंगे के दूसरे तरीकों पर बैठक करने चले गए।

●●●

आकडा

सरकार न कम्पोज्ड खाद के कितने गडढे अभी तक खुद गए हैं आकडे मागे अपने गुणों के प्रचार-प्रसार के लिए यह आंकड़े तत्काल चाहिए थे।

इसके लिए राज्य सरकार ने जिला विकास अधिकारी को आदेश दिया और उन्होंने अपने अधीनस्थ को।

अधिकारियों को भला कहाँ समय था कि वह बदबू भरे गड्ढें गिनवाते, उन्होंने अपने अनुमान के आधार पर आंकडे प्रस्तुत कर दिए। बड़े साहब को यह आंकड़े कम लगे, उन्होने उसे अपनी तरह से चौगुना कर दिया।

जब सारे प्रदेश के आंकड़े इकट्ठा किए गए तो लोग आश्चर्य चकित रह गए कि गड्ढों का क्षेत्रफल प्रदेश की कुल भूमि के क्षेत्रफल से भी अधिक था।

●●●

माडर्निटी

मिल मालिक हरिकृष्ण जी का पारा आज सातवे आसमान पर था सामने रहने वाले मजदूरों के घर ढोल पीट-पीटकर रोज होने वाले भजन कीर्तन और नाच गाने से वह ऊब गये थे उन्होंने चिल्लाकर श्यामू को आवाज दी ''तुम लोग यह रोज-रोज का भजन कीर्तन बन्द करों नहीं तो मैं आज तुम सभी को यहॉ से हटवा दूॅगा।''

श्यामू को डॉट खाते देखकर सभी मजदूर इकट्ठा हो गए और एक स्वर में बोले ''साहब, जब आपके घर मे आधीरात तक जोर-जोर बाजे के साथ नशे में धुत साहब और साहिबान लोग नाच करते है तब हम लोग तो कुछ नहीं कहते।''

चुप साले, तुम सब हमेशा पिछडे के पिछडे रहोगे, मेरे यहॉ जो कुछ होता है वह ''माडर्निटी'' की निशानी है जो बडे साहबों की पहचान है!

●●●

हवाई-यात्रा

राजदेव जी अपने मंत्रित्व काल में पहली बार हवाई-यात्रा का आनन्द अपने पूरे दल बल के साथ उठा रहे थे इसके पहले उन्होंने हवाई जहाज पर बैठने की कभी कल्पना ही नहीं की थी।

हवाई जहाज जब रन-वे पर उड़ान भरने लगा, उन्हें कुछ झटका सा महसूस हुआ। उन्होंने बगल में बैठे सचिव से का ''लगता है हवाई जहाज की सड़क भी अपने यहाँ की सड़क जैसी गड्ढे वाली है, आदेश नोट करिए तत्काल यह सडक बनवाई जाय।''

सचिव बिचारे मंत्री जी से क्या बहस करते। हाँ उनके अधीन कार्य करने पर सचिव को अपनी सारी डिग्रियाँ बेमानी लगने लगी।

उनका मन हुआ कि वह तुरन्त हवाई जहाज से अभी छलाग लगा लें।

●●●

सरकारी नौकरी

वर्मा जी अपने छोटे बेटे मनु के नौकरी को लेकर काफी चिन्तित रहा करते थें। उनका बड़ा बेटा डाक्टर था और दूसरा लेक्चरर, यह तीसरा बेटा घिस घिसकर स्नातक ही हो सका था।

एक दिन बेटे के भविष्य को लेकर वर्मा जी चिन्तित होकर सामने पार्क में बैठे थे, उनके पड़ोसी मिश्रा जी उनके पास आये और बोले आप कुछ अधिक परेशान लग रहे हैं, क्या बात है, शायद मैं कुछ आपकी मदद कर सकूँ।"

क्या बताऊँ मिश्रा जी, मेरी चिन्ता तो तभी दूर होगी, जब मेरा नालायक बेटा मनु, किसी तरह सरकारी नौकरी में लग जाता।

वर्मा जी ने तो चिन्तामुक्त होने का सुझाव दिया था किन्तु मिश्रा जी सोच रहे थे क्या सरकारी नौकरी उन्हीं को मिलती है जो मनु जैसा नालायक हो।

●●●

पशु

कंचनपुर में एक ही पशु संस्थान था जिसमें कई प्रकार के जीव जन्तु थे। वहाँ कुत्तों की संख्या अधिक थी कुछ मोटे, कुछ पतले और कुछ मरियल कुत्ते। अधिकांश कुत्ते दुम हिलाने वाले ही थे, भौंकने वाले कम।

एक दिन एक मरियल कुत्ता संस्थान में घुस गया। उसने देखा वहाँ खाने-पीने की अच्छी व्यवस्था है, उसने फिर वहीं अड्डा बना लिया। खा पीकर वह कुछ दिनों में काफी तन्दुरूस्त हो गया था। अब उसका कुत्तापन जागृत हो गया था; अब वह सभी भौंकने वाले कुत्तों का नेता था।

इस बीच संस्थान में एक नये प्रबंधक आ गये। उन्होंने सोचा दुम हिलाने वाले कुत्तो की क्या फिकर करनी है वह स्वभाववश दुम हिलायेंगें ही। सबसे पहले भौंकने वाले कुत्ते को वश में करना होगा।

दूसरे दिन बड़े प्यार से उन्होंने भौंकने वाले कुत्ते को पास बुला कर लंच के लिए बुलाया। कुत्ता आया, उसने आधा लंच देखकर गुर्राकर प्रबंधक को ही काट लिया। उस समय उनके कष्ट को देखकर दुम हिलाने वाले कुत्ते उनके पास सहानुभूति में पहुँच गए। चोट खाकर प्रबंधक को उसकी बेबसी का आभास हुआ।

पीड़ित प्रबंधक ने सभी कुत्तो के दुम कटवा दिए और सभी कुत्तों को भौंकने की ट्रेनिंग दे दी। अब भौंकते हुए सभी कुत्ते एक दूसरे को काटने लगे। और पशु सस्थान की प्रगति देखते हुए प्रबंधक महोदय ने उसका नाम "कटहा कुकुर सस्थान" रख दिया।

●●●

सफलता की कुंजी

वह अपनी जिन्दगी की ढेर सारी घटनाएं सुनाता रहा। उसने मुझे पूरा विश्वास दिया कि किताबें और ज्ञान की बातों के सहारे आज कोई व्यक्ति सफल नहीं हो सकता है, सफलता की कुंजी है, उलट-फेर, झूठ-फरेब और बडबोलापन।

मैंने तत्काल उसके बताए फार्मूले को अपनाया। कार्यालय पहुंचते ही पहले रामबाबू की प्रतीक्षा सूची में डालते हुए उनके स्थान पर श्रीमती शर्मा को एम.डी. बना दिया क्योंकि वह ही उनकी आवश्यकताओं को समझ सकती थीं।

उलट-फेर, झूठ फरेब और बडबोलापन की दुकान चलाकर उन्होंने अपनी गणना एक बहुत बडे साहित्यकार और नेता में करा ली थी। उनके आगे अब बडे-बडे ग्रन्थ लिखने वाल लेखक और राजनीति की रोटी सेंकने वाले नेता बौने नजर आ रहे थे।

●●●